शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 5 | उदयपुर मंगलवार 15 मार्च 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली आई रे, आई रे, होली आई रे

डॉ. तुक्तक भानावत

त्योहारों का मुख्य उद्देश्य जनजीवन में हर्ष, उल्लास एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना होता है। इन त्योहारों के पीछे देश की संस्कृति, सभ्यता, दंतकथा, कहानियां व जातिगत परंपराएं जुड़ी हुई रहती हैं। भौतिकवाद पर अध्यात्म की विजय तथा भक्त प्रहलाद के आख्यान की पावन स्मृति लिए, जबकि अंधकार पर प्रकाश के, असत्य पर सत्य के एवं पाप पर पुण्य के शंख का जयघोष हुआ था, रबी की फसल की पूर्ण तैयारी के पश्चात फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ होलिकोत्सव मनाया जाता है।

राजस्थान में वैसे होली का कार्यारंभ फाल्गुन शुक्ला एकादशी से ही प्रारंभ हो जाता है। कुमारिकाएं तथा महिलाएं गोबर के नाना भांति के बड़ुले (बड़बले अथवा बड़कुले) बनाती हैं। होली माता की मूर्ति भी बनाती हैं जिसमें नेत्रों की जगह छोटी-छोटी कौड़िएं लगा दी जाती है। पुरूष वर्ग अपनी-अपनी मंडली बनाकर बाग-बगीचों में 'गोठें' (दावत) करते हैं। महिलाएं अपने-अपने मोहल्लों के घरों में से चुंगी एकत्रित करती हैं। चौराहे पर होली का डांडा रोपा जाता है। औरतें गीत गाती हैं। जनजीवन में अपार हर्ष की लहर आंदोलित हो उठती है।

मेवाड़ में होली के रूप : होलिका दहन के एक माह पूर्व गढ़ की होली जिसे 'रावली होली' भी कहते हैं, रोप दी जाती है। उसके ऊपरी अंतिम सिरे पर घास के दो लंबे-लंबे हाथ बनाकर बांध दिये जाते हैं और उनके ऊपर ध्वजा की तरह लाल कपड़ा फहरा दिया जाता है। जनता की होलिएं अपने-अपने पाडे (क्षेत्र) में रोप दी जाती हैं। ये होलियां हेमरे नामक वृक्ष की बड़ी-बड़ी शाखाएं होती हैं जो जंगल से काटकर लाई जाती हैं। इनके ऊपर विशेष प्रकार के बूंटीदार कांटे लगे रहते हैं जिन्हें होली के सिंघाड़े भी कहते हैं। गूंदी (वृक्ष) के छिलकों के साथ जब इन सिंघाड़ों को बाल-गोपाल चबाते हैं तब जीभ ऐसी रच जाती है जैसी अच्छे से अच्छा पान खाने से भी नहीं रचती। बालिकाएं होली माता के लिए गोबर के सौलह बड़ुले बनाती हैं जिनमें बोर, चूड़ी, जीभ, कंघी, सिंघाड़े, सोपारिये, टणके, नेवलिएं, नारियल तथा हाथ-पांव के अन्य आभूषण होते हैं। इन बड़ुल्लों की मालाएं बनाकर होली को पहना दी जाती हैं।

फागण रा दिन चार : होली के पास ही बने चबूतरे पर सभी बालिकाएं संध्या समय एकत्रित हो होली के गीत गाती हुई मनोरंजन करती हैं। अपने-अपने घरों से होली की चुंगी के रूप में ज्वार की फूली, भूंगड़े (चने), मुरमुरी (सेव) आदि लाकर आपस में बांटकर खाती हैं। बालिकाओं द्वारा गाए जाने वाले गीतों में कुछ अत्यंत लोकप्रिय गीत इस प्रकार हैं-

(1) ऊबी रीझे होली थारे,
रखड़ी गड़ाई दूं।
डाबा में मत मेल होली,
तिलौकचंदजी री नार होली
फागण रा दिन चार होली,
वेगी आवजे।
(2) ई कुण खेड़ादार,
होली पामणी रे लाल।
ई कुण वडुल्या वरावे,
होली पामणी रे लाल।

बालकों में भी एक नया उत्साह रहता है। होली जलाने के लिए वे अलग-अलग टोलियां बनाकर घरों-घरों से उपले, लकड़ी तथा घासफूस आदि लाकर होली के वहां ढेर सा लगा देते हैं।

फागण आयो रसिया : गढ़ की यानी रावली होली जलाने के बाद दूसरी होलियां जलाई जाती हैं। जलती हुई होली को देख औरतों के कल-कंठों से स्वत: गीत फूट पड़ते हैं-

होली तो माता गढ़ से उतरी /
कोई हाथ कांगण माथे वीर /
ये रायां की होली।

होली की ज्वाला में गेहूं तथा जौ की बालें सेकी जाती हैं। कहीं-कहीं पापड़ भी सेके जाने लगे हैं। राजस्थान में फाल्गुन मास में स्त्रियां विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती हैं। इन्हें फागणिया, पीलिया, चूनड़ी अथवा बसंतिया कहते हैं। होली पर फागणिया ओढ़ने की बात गीतों में स्वाभाविक ढंग से उमड़ पड़ती है-

फागण आयो रसिया
फागणियो रंगाई दो
पीलिये में मच रही होली,
रम रही होली/ फागणियो
रंगाई दो।

भाई-भाई रे गैर्या : कुछ होली के जलने के बाद वह किसी कुए अथवा बावड़ी में डाल दी जाती है। इस दिन रात भर गैर खेली जाती है। आसपास के गांवों के लोग भी गैर देखने अथवा खेलने आते हैं। गैर खेलने के लिए लहरियेदार लकड़ी होती है जो गूंदी के छिलके लपेट आग में तपाकर तैयार की जाती है। गोलाकार रूप में अत्यंत तन्मयता के साथ गैर खेली जाती है। बीच-बीच में 'धन्त्योपतड़', 'भाई-भाई रे गैर्या', 'वाह-वाह रे गैर्या' के उत्साहवर्धक उच्चारण भी होते हैं। चंग की थाप के साथ-साथ गाए जाने वाले गीतों की ध्वनि होली आने की सूचना देती है-

रंगीलो चंग बाजणू,
छबीलो चंग बाजणू
चंग आंगलियां बाजै,
चंग मूदड़ियां बाजै
चंग पूंचे के बल बाजै,
रंगीलो चंग बाजणू।

इस अवसर पर होने वाले नृत्यों में घूमर, गैर तथा गींदड़ नृत्य प्रसिद्ध हैं। यथा-

म्हारी घूमर छै नखराली ए मां,
घूमर रमवा म्है जास्यूं
म्हानै रमती ने लाड़ूला लादा ए मां,
म्हारी घूमर रमवा म्है जास्यूं

बालिकाएं 'होली आई रे सहेल्यां मिल खेलां लूर' गाकर लूर खेलती, इठलाती, हंसती, मुस्करातीफूली नहीं समाती हैं।

ढूंढ़ तथा धुलंडी : होली के दूसरे दिन होली की राख का तिलक लगाकर बाल-बच्चे 'ढूंढ़ाए' जाते हैं। होली के चारों ओर सात-सात परिक्रमा लगाई जाती है। 'ढूंढ़ने' वाले अपने साथ नारियल लाते हैं जिसे वहां बैठे गैर्ये खाते हैं। संध्या को सभी गैर्ये ढूंढ़ने वालों के घर जाकर 'भुजिये-पापड़ी' का नाश्ता करते हैं। यह दिन धुलेड़ी, फाग, धुलंडी, धुलेंडी अथवा धुलेल खेलने का होता है। पास ही जंगल में ढाक के फूल लाकर उसका रंग बनाया जाता है। इनके अलावा लाल, पीला, नीला, गुलाबी आदि रंग छांटकर दिनभर फाग खेला जाता है। नन्हें-नन्हें बच्चे अपने हाथों में रंग की पिचकारी छोड़ते फूले नहीं समाते हैं। फाग खेलने के पश्चात सभी स्नान आदि से निवृत्त हो नये वस्त्र धारण कर सगे-संबंधियों तथा जान-पहचान वालों को अभिवादन करने जाते हैं।

होली के चले जाने के बाद भी डांडिया और गैर चंग की चलत के गीत कानों में टकराते रहते हैं। 'रंगीलो चंग बाजणो', 'म्हारी सांवली सूरत पर कुण डारी पिचकारीजी' तथा 'होली खेलो रे चतुरभुज चार घड़ी होली खेलो रे' जैसे गीत गुनगुनाते हुए अगले वर्ष होली आने की प्रतीक्षा करते हैं।

होली देव ईलाजी

डॉ. पूरन सहगल

होली पारंपरिक रूप से रंगों का उमंग, उल्लास और मस्तीभरा त्योहार है। जहां होली के रंग आनंद देते हैं वहीं होली की ठिठोली का भी एक अजब मजा है। होली के रंग, गेरियों की चंग और हरी-हरी भंग का मस्त मजा लेने के लिए सब तैयार रहते हैं। कहावत है-

होली की गाली,
मिठाई वाली दीवाली।
लाडू जैसा साढू
और जलेबी जैसी साली।।

इनकी मिठास भुलाए नहीं भूलती।

होलिका दैत्यराज हिरण्यकष्यपु की बहिन थी। वह विष्णु भक्त थी किन्तु अपने भाई के कोप से बचने के लिए अपनी विष्णु भक्ति प्रकट नहीं होने देती थी। अग्निदेव की तपस्या के फलस्वरूप उसे एक लोई (शॉल) प्राप्त थी जिसे ओढ़ लेने पर अग्नि अपना प्रभाव नहीं दे पाती थी।

हिरण्यकष्यपु ने होलिका को आदेश दिया कि वह प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर चिता में बैठ जाय। लोई के प्रभाव से तुम तो बची रहोगी और प्रहलाद जलकर राख हो जाएगा। होलिका विवश थी।

वह प्रहलाद को लेकर चिता में बैठ गई। चिता में अग्नि प्रज्वलित होते ही होलिका ने अपने भतीजे प्रहलाद को वह वरदानी लोई ओढ़ा दी। फलत: प्रहलाद तो बच गया और स्वयं होलिका जलकर राख हो गई। एक विष्णु भक्त ने दूसरे विष्णु भक्त की प्राण रक्षा कर ली।

जिस दिन होलिका दहन हुआ उसी दिन होलिका का मंगेतर ईलाजी बारात लेकर तोरण पर पहुंचा। जैसे ही उसे होलिका दहन की सूचना मिली वह चिता स्थल की ओर दौड़ पड़ा। वह वहां पहुंचा तब तक होलिका राख हो चुकी थी।

ईलाजी पागल होकर इधर-उधर दौड़ने लगा। उसने अपने वस्त्र तक फाड़ फैंके। वह पूरी तरह नग्न हो गया और होलिका की गर्म राख पर लेट गया। खूब लोटपोट हो बेसुध हो गया किन्तु बच नहीं सका अन्तत: मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसकी स्मृति में होलिका दहन के अगले दिन धुलेंडी पर चौराहों पर मिट्टी से मानवाकार नग्न ईलाजी थापे जाते रहे।

मध्यप्रदेश के नीमच जिले के मेरे नगर मनासा में भी चौपड़गट्टे पर मिट्टी के ईलाजी थापे जाते थे। उनके लिंग स्थल पर एक गोल डण्डा गाढ़ा जाता था। स्त्रियां उस पर भी जल सिंचन करती थीं। कहीं-कहीं ईलाजी संतान देवता भी माना जाता। निपूती स्त्रियां लिंगाकार दण्ड की पूजा कर उसे अपनी योनी से छुवाती। ऐसा वे गुप्त तरीके से करतीं। वैसे भी लिंग पूजा का प्रावधान भारत में नया नहीं है।

मनासा के वर्तमान बस स्टेण्ड पर कुछ वर्ष पूर्व ऐसे ही ईलाजी थापे गये थे। एकबार तो सचमुच का ईलाजी बनाकर झांकी निकाली गई। एक स्थानीय डाक्टर सा. को ईलाजी का इलाज करने के लिए भी बुला लाए। गेरिये लोग राह चलते लोगों को पकड़कर ईलाजी के धोक लगवाते।

आज वह ईलाजी की मस्ती, गेर की गालियां और रंग की बौछार नहीं रही। एक विवशता भरा पारंपरिक त्योहार मात्र रह गया। वर्ष भर की कुंठाओं को धोकर शुद्ध कर देने वाला यह त्योहार कभी-कभी सामाजिक तनाव देने लगता है।

स्मृतियों के शिखर (5) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गोपालप्रसाद व्यास जिन्होंने हजार शौक पाले

24 मई 1982 को हास्य रस के प्रख्यात कवि गोपालप्रसाद व्यास एक कविसम्मेलन में उदयपुर आये तब उनसे हुई भेंट के दौरान इधर-उधर की बहुत सारी बातों में रसविभोर होते रहे। गप्पबाजी के साथ व्यासजी की लिखी इस पैरोड़ी ने भी हमें कम गुदगुदी नहीं दी-

सूर सूर, तुलसी शशि,
उड़गन केशवदास।
अबके कवि खद्योत सम,
लालटेन है व्यास।।
लालटेन है व्यास कि
जिसमें तेल नहीं है।
बत्ती उलझी हुई,
जलाना खेल नहीं है।।

व्यासजी ने बताया कि साहित्य महारथियों ने इसमें जितना नमक-मिर्च मिलाना चाहा, मिलाया और छौंकें भी खूब लगाई। यहां उस बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं-

प्रश्न - कविता में आप किसको प्राथमिकता देते हैं?

उत्तर- कविता में राग और रस जरूरी है। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैंने जगन्नाथप्रसाद 'रत्नाकर' से लेकर आज के नीरस कवि तक के साथ अपनी रचना पढ़ी। कविता में राग और रस जरूरी है, ऐसा मैं मानता हूं। चाहे वह कोई सी कविता हो। तुकान्त, अतुकान्त, नई या पुरानी हो। अधुनातन लोग जिनका संबंध न राग से है और न रस से, उन्होंने जापान, फ्रांस, अमेरिका की कविताएं देखीं और वे उन्हीं की नकल मारने लग गये। यदि कोई श्रुत मधुर नहीं है तो उसमें हल्कापन आ जाता है जिससे श्रोता के साथ आत्मीयकरण नहीं हो पाता।

प्रश्न - आपको पत्नीवाद का प्रवर्तक समझा जाता है। क्या यह सही है?

उत्तर- उस संदर्भ में तो नहीं, जिस संदर्भ में जैनेन्द्रजी ने प्रेयसी पर अधिक जोर दिया। हमारे बाद के लोगों ने तो पत्नी की दुर्दशा ही कर दी पर जब स्वतंत्रता का संघर्ष चल रहा था तो हमने मंचों पर कविता के माध्यम से पत्नी के बहाने गोरी सरकार की मरम्मत करना शुरू कर दिया तो उसी में से पत्नीवाद निकल आया। यह सही है कि 'पत्नी को परमेश्वर मानो' तथा 'सलवार चली' जैसी मेरी कविताओं ने पूरे देश में मात्र सराहना ही अर्जित नहीं की, पत्नीवाद की प्रतिष्ठा भी की। पत्नियों का सम्मान होने लगा और महिलाओं में भी आत्म जागृति तथा चेतना विकसित हुई।

प्रश्न - सुना है आपके पास जो छड़ी है वह न केवल ऐतिहासिक है वरन् चमत्कारिक भी है।

उत्तर - मेरे पास जो छड़ी रही वह सदैव ही ऐतिहासिक रही। पहले जो छड़ी थी वह चक्रवर्ती राजगोपालाचारी वाली थी जो उन्होंने महात्मा गांधी को देनी चाही। उन्होंने बापू से कहा कि आपके पास जो छड़ी है वह ठीक नहीं है, यह मेरे पास वाली आप रखिये। इस पर बापू बोले- मुझे तो बहुत अच्छी छड़ी की आवश्यकता नहीं है। ठीकठाक छड़ी ही मेरे लिए ठीक रहती है। मैं तो साधारण आदमी हूं पर राजगोपालाचारी नहीं माने और उन्होंने वह छड़ी बापू को दे दी।

प्रश्न - मैंने सुना कि आप बचपन में अच्छे खिलाड़ी रहे। नौटंकी खेलों में आपने खूब भाग लिया और कुछ खेल भी आपने लिखे।

उत्तर - यह सही सुना। एक शौक ख्याल-तमासों का भी लग गया। हमारे ब्रज में नौटंकी खेलों का जबर्दस्त प्रचार था सो हमें भी शौक चढ़ा। कोई तेरह-चौदह वर्ष की उम्र में हमारे ऊपर इतना प्रभाव पड़ा कि हमने पद्मिनी नाम से एक नौटंकी खेल ही लिख दिया।

होली के दिनों में ब्रज में रसिया बड़ा तरन्नुम में गाया जाता है। हमने भी एक रसिया लिखा जो पहले ब्राह्मणों में खूब चला। इसकी पकड़ इतनी मजबूत हुई कि दूसरे वर्ष उसकी तान अहीरों ने पकड़ ली। उसकी लोकप्रियता के चलते तीसरे साल अछूतों ने उसे गाना शुरू किया तो लोग भड़के और कहने लगे कि अब तो तान छू गई है। यह बात सब ओर फैल गई। लोग आकर कहने लगे कि पंडितजी, आपकी तान ही अछूत हो गई है। उसके बाद उसे किसी ने नहीं गाया। यह विडम्बना ही कही जायेगी।

प्रश्न - आपका लेखन न केवल सुनने में, अपितु पढ़ने में भी बड़ा मजा देता है। दैनिक हिन्दुस्तान में प्रति रविवार को मैं वर्षों से 'नारदजी खबर लाए हैं' स्तंभ पढ़ता आ रहा हूं। कैसे हर सप्ताह आप ऐसा गद्य लेखन कर ऐसे पाठकों को भी गुदगुदाते हैं जिनका साहित्य से कोई सरोकार नहीं होता।

उत्तर - लिखने का मजा ही असल में यही है। यह भी मेरा शौक है। कई निराले शौक रहे मेरे सिर पै पर मैंने किसी को हावी नहीं होने दिया। उन्होंने एक-एक कर गिनाने शुरू किये। मैं बहुत बढ़िया खाता हूं। खाना खाने के बाद मुझे रबड़ी खाने का बड़ा चाव रहा पर अब वैसा शरीर नहीं रहा सो पपीते पर उतर आया हूं। यह देखो, पपीता यहां भी मेरा शौक पूरा करने को हाजिर है। खाने के साथ-साथ मैं पहनता भी बढ़िया हूं। राजगोपालाचारी जो खादी पहनते, वो मैंने पहनी है। आचार्य कृपलानी के कपड़े जिस खादी के बनते, उनसे मैंने बंडी बनाई है।

मैंने एक-से-एक बढ़िया इत्र का शौक फरमाया है। मालिश का भी मुझे शौक रहा। खूब तैराकी भी मैंने की और व्यायाम भी खूब किया। शतरंज-ताश भी खूब खेली और कविताबाजी भी कम नहीं की। और सुनें तो मैं सिगरेट का भी चैन स्मोकर रहा। आजकल पान का शौक चर्रा रहा है। सुबह से शाम तक तीस-चालीस पान खा जाता हूं। रात को भी पास में रखकर सोता हूं।

कभी मेरे यहां भांग भी खूब छनती थी तब पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', इलाचंद जोशी, उदयशंकर भट्ट और मथुरा के प्रसिद्ध भंगेड़ियों के साथ भी मैंने खूब भंग पी है। यही क्यों, मुझे किस शहर की क्या-क्या चीजें प्रसिद्ध हैं उन्हें जानने और उन्हें खरीदने का भी बड़ा शौक रहा है। यहां उदयपुर के लकड़ी के खिलौने, मोचीवाड़े की जूतियां और चीवड़ा प्रसिद्ध है। सच यह भी है कि मैं सात दर्जा ही पास हूं पर दर्शन, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, संस्कृत सबको पढ़ा है। रात को चार-चार बजे तक पढ़ने का शौक है। मेरा यह सब वैशिष्ट्य है या पागलपन या हविश ; मैं नहीं जानता। मैंने एक नहीं हजार शौक पाले पर बंधा किसी से नहीं।

फूलों द्वारा फलों का सुखद सम्मान

उदयपुर। महावीर युवा मंच द्वारा 12 मार्च को शहर के वरिष्ठजनों का सम्मान समारोह सबको सुखद अनुभूति दे गया। लगा जैसे फूलों ने मिल अपने ही वंशदाताओं का श्रद्धास्पद तीर्थाटन किया है। लगा जैसे अंगूरों ने दाख बने अपने बड़ेरों का सान्निध्य पाकर जीवन धन्य किया है। सम्मानितों को लगा कि उन्होंने जो स्वप्न देखा था उसी अनुरूप उनके संसार सुगंधा रहे हैं और वे अपने शेष जीवन के स्वर्णिम सुख को मोक्षपीठ दे रहे हैं।

सम्मानकर्ताओं द्वारा कहा गया कि वरिष्ठजन उनके लिए वैतरणी हैं। जीवन निर्माण के नियामक हैं। विकास को वातायन देने वाले हैं। अन्तर्मन के ज्योति कलश हैं। पारदर्शी प्रतिबिंब हैं। उनका सान्निध्य, सहकार तथा सदानंद पाकर वे समतामूलक समाज के श्रेष्ठतम की संरचना करते हैं। यही जीवन की सांगोपांग सार्थकता है। भारतीयता की पहचान का प्रमुख आधार भी श्रेष्ठजनों द्वारा निर्मित आदर्श समाज द्वारा पूरे विश्व को एक परिवार, एक कुटुम्ब बनाने की अनिवार्य अवधारणा है।

समारोह में 75 वर्ष से 94 वर्ष तक के 55 उन वरिष्ठजनों का बहुमान-सम्मान किया गया जो विविध क्षेत्रों में परिपक्व अनुभवों के पर्याय थे।

इनमें सर्वश्री कर्नल डॉ. दलपतसिंह बया, फतहलाल नागौरी, कस्तुरचन्द सिंघवी, भूरालाल पोरवाल, शांतिलाल बाबेल, डॉ. महेन्द्र भानावत, तेजसिंह नागौरी, नजरसिंह ओर्डिया, मनोहरसिंह नलवाया, उगरसिंह सांखला, मांगीलाल हाथी, भंवरलाल पारीवाला, डॉ. आर. एम. लोढ़ा, मोहनसिंह वर्डिया, कुन्दनलाल सामर, प्रतापसिंह गांधी, करणसिंह गलुण्डिया, सोहनलाल कोठारी, रमेशकुमार बारोला, दौलतसिंह खमेसरा, हिम्मतसिंह मेहता, गुमानीलाल लोढ़ा,

सुजानमल गदिया, रूपलाल गंगावत, लक्ष्मीलाल बण्डी, बसन्तीलाल वया, मोतीलाल सामोता, सुवालाल भड़कतिया, डॉ. के. एल. कोठारी, तेजसिंह भाणावत, सूरजकुमार चौधरी, नेमीचन्द चित्तौड़ा, बसन्तीदेवी पोरवाल, कंचनदेवी बापना, सौरभदेवी कोठारी, राजकुमारी जैन, बसन्तीलाल बाबेल, धरमचन्द कोठारी, डॉ. जी. सी. लोढ़ा, शांतिदेवी मेहता, शांतिलाल सेठ, रतनलाल हिंगड़, जीतमल चपलोत, शोभागमल लोलावत, कैलाशचन्द्र सोनी, नानालाल भगत, सौभाग्यसिंह माण्डावत, हुलास ओर्डिया, माणकलाल ठाकुर्डिया, धनराज चित्तौड़ा, मिठालाल चित्तौड़ा, मोतीलाल चित्तौड़ा, रणजीतमल सोजतिया, चन्द्रसिंह मुणेत, मगनलाल जैन को शॉल, उपरना, प्रशंसा पत्र, प्रतीक चिन्ह प्रदान कर अतिथियों ने सम्मानित किया।

मंचासीन विभूतियों में अध्यक्ष शिक्षासेवी भंवर सेठ, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, बड़ीसादड़ी विधायक गौतम दक, फतहनगर नगरपालिका अध्यक्ष ज्ञानचन्द पाटोदी, सेवार्थी किरणमल सावनसुखा, समाजसेवी निर्भय सिंघवी की गरिमामय उपस्थिति रही। डॉ. लोकेश जैन, आलोक पगारिया की काव्य-चेतना गूंजपूर्ण रही। कार्यक्रम का संयोजन सीमा चंपावत ने किया।

समारोह में मंच संरक्षक प्रमोद सामर, अध्यक्ष अशोक लोढ़ा, राजेश चित्तौड़ा, नीरज सिंघवी, अर्जुन खोखावत, भंवरलाल पोरवाल, हर्षमित्र सरूपरिया, नरेन्द्र जैन, डॉ. तुक्तक भानावत, रमेश सिंघवी, मनोज मुणेत, भगवती सुराणा, दिलीप मोगरा, नेमी जैन, बसन्त लोढ़ा, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षा रीतू सिंघवी, महामंत्री प्रमिला पोरवाल, नीता खोखावत, रश्मि पगारिया, मधु सुराणा, रेणु मोगरा, प्रेरणा जैन, रश्मि सरूपरिया, उर्मिला भण्डारी की महत्वपूर्ण भागीदारी रही।

पोथीखाना

प्रो. देवकर्णसिंह की दो दोहा कृतियां

प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ पिछले सात दशक से अपनी मौज के महत्वपूर्ण कवि के रूप में पहचान लिए हैं। डिंगल के दोहा छंद में निरन्तर लिखते हुए वे दोहा सिद्ध प्रसिद्ध हो गये हैं। उन्होंने कभी कोई आलतू फालतू नहीं लिखा। जो भी लिखा, उल्लेखनीय, टकसाली और स्वर्णतोल लिखा। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर इनके नजदीकी दर्शन होते रहे पर प्रकाशन की दृष्टि से ये दूर ही रहे। अब जाकर धीरे-धीरे इनके लिखे पोटले खुलते जा रहे हैं। 'पिउ पिवै दारुह' तथा 'हळदीघाटी हाल' के बाद 2013 में 'बणी ठणी रा बालमा' और 2015 में 'चत्रगढ़ हेला देय' पुस्तक छपी।

रूपनाथ बाबा प्रकाशन समिति हिरणमगरी, उदयपुर से प्रकाशित इन पोथियों की यह विशेषता है कि इनके दोहे डिंगल भाषा की ओलखाण दे रहे हैं जिसका अब प्रचलन नहीं रह गया है किंतु जिसमें रचनाकार सूर्यमल्ल मिसण, नाथूसिंह महियारिया तक ने जो ख्याति अर्जित की, देवकर्णसिंह उसी ख्याति के ख्यात बने हुए हैं जो अब अकेले और एकमात्र अनूठे हैं। इन कृतियों में शोभित प्रत्येक दोहे का शब्दार्थ, भावार्थ, अलंकार तथा टिप्पणी के साथ-साथ उसका अंग्रेजी भावार्थ भी दिया गया है। संपादन का यह दायित्व प्रो. जी.एस राठौड़ ने बड़ी विद्वतापूर्ण निष्ठा से निभाया है जो प्रो. देवकर्णसिंह के साथ उदयपुर के भूपाल नोबल्स पीजी कॉलेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे और विदेशों में भी अपने अध्यापन की छाप छोड़ी।

देश के अन्य प्रांतों से अपने जीवन परिवेश तथा संरचना में राजस्थान भिन्न है। यहां सती है तो संत भी और शूरमा भी हैं। तीनों किसी अन्य प्रांत में नहीं मिलेंगे। बणी ठणी में कवि ने राजस्थान की विरहणियों की घनीभूत वेदना का जो वर्णन किया है वह यहां की महिमा, मठोठ, मरोड़ तथा विकलता का रस भीगा दरसाव है। कुल 101 दोहों में राजस्थानी रंग के जो विविध वर्णन मिलते हैं वे यहां की सांस्कृतिक पीठिका के जीवंत दिग्दर्शन हैं। दस परिशिष्टों में समाविष्ट राजस्थानी नायक-नायिकाओं के संबोधन, आवास-निवास के परिवेश-शब्द, परिधान, आभूषण, नायिका भेद, त्यौहार, वैवाहिक प्रसंग तथा दोहों के विविध रूपों से संबंधित वर्णन-शब्दावली भी यहां के वैशिष्ट्य की अनुपम अभिव्यक्ति है।

'चत्रगढ़ हेला देय' में 109 दोहे संगृहीत हैं जो विश्वप्रसिद्ध चित्तौड़ के किले के बखान के सूचक हैं। ये दोहे अपनेआप में चित्तौड़ के प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में अतीत के ऐतिहासिक वैभव को जगजाहिर करते कई अज्ञात-अल्पज्ञात संदर्भ समेटे हैं। विशेष टिप्पणियों के माध्यम से कई तरह की जानकारी देती यह पुस्तक अतीत के वैभवपूर्ण इतिहास को पारदर्शी बनाती है। हर दोहे की अंतिम कड़ी 'चत्रगढ़ हेला देय' लगता है जैसे चित्तौड़ सबको आमंत्रित कर अपनी कहनी से सबको अवगत करा रहा है। एक दोहा-

पचग्यो अलाउदीन पण,
सक्यो न पदमण लेय।
जूहर वा कण-कण रमैं,
चत्रगढ़ हेला देय।।

सामंती घराने के होने के कारण कवि देवकर्णसिंह ने प्रत्येक दोहे को शौर्यपूर्ण साहसिक करतबी परिवेश से मंडित कर उसके सांस्कृतिक पक्ष को प्रतिध्वनित करने का ओजपूर्ण कार्य किया है। हर दोहा अपने में एक कथा, एक घटना, एक दास्तान को लिए हमारे समक्ष जीवंत हुआ लगता है।

बुंदेली बसंत का उत्सव अंक

बुंदेली विकास संस्थान छतरपुर से प्रकाशित बुंदेली बसंत का यह 17वां वार्षिकांक है। डॉ. बहादुरसिंह परमार बुंदेली भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास, पुरातन से सम्बद्ध महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करने का बीड़ा उठाये हैं। उनके इस साधनामूलक पुरूषार्थ ने बुंदेली की विशिष्ट पहचान बनाकर उस जनपद के योगदान को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य दिया है।

परिणामस्वरूप अनेक लोगों ने इस ओर अपना ध्यान केंद्रित कर बड़ी मूल्यवान अल्पज्ञात अज्ञात सामग्री जुटाई है और छात्रों को शोधानुसंधान के लिए प्रेरित किया है। डॉ. बहादुरसिंह के अनुसार कई युवा लेखकों ने बुंदेली में साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी दी है। कई रचनाकारों ने नये विषयों और विधाओं को स्पर्श किया है। इसबार पहलीबार इस अंक में डॉ. दया दीक्षित का लिखा एक लघु उपन्यास 'बुंदेली में गुन-अवगुन को गली में जिद्द' प्रकाशित किया गया है। ऐसे प्रयास प्रत्येक जनपद में होने चाहिएं।

डॉ. व्यास को बिहारी पुरस्कार

जानेमाने रचनाधर्मी डॉ. भगवतीलाल व्यास को के. के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा बिहारी पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। एक लाख के इस पुरस्कार के लिए उनकी राजस्थानी काव्यकृति कठा सूं आवै सबद को चुना गया है। पुस्तक के शीर्षक को सार्थक करती उसी पुस्तक की कविता यहां प्रस्तुत है-

कठा सूं आवै है सबद
भूगर्भ सूं, समंदर सूं
या फेर मिनख री नाभी सूं?
कठा सूं आवै है सबद
पांखियां रै कलरव सूं
नदी रै प्रवाह सूं
या फेर मिनख रै सुपनै सूं?
कठा सूं आवै है सबद
खेत में खड़ी फसलां सूं
फलां सूं लद्या बगीचा सूं
रेत रै अणकूत परसाव सूं
या फेर मिनख रै मून सूं?
कठा सूं आवै है सबद
मजल सूं, पगां सूं
गतागम बिहूण हूंस सूं
या फेर पगथळी गड्ये आंधले सूल सूं?
कठा सूं आवै है सबद
रात रै अंधारै सूं, दिन रै उजाळै सूं
या फेर हरेक रात नै दिन में बदळण री
बावळी अड़ी सूं?

डॉ. मालती को पुत्र-शोक

पुणे की सुविख्यात कवयित्री एवं लोकवार्ताविद् डॉ. मालती शर्मा के बड़े पुत्र श्री सौरभ शर्मा का गंभीर निमोनिया और लीवर डेमेज से 22 फरवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे 54 वर्ष के थे। श्री सौरभ शर्मा चेन्नई में नामवंत साफ्टवेयर पर मूलतः मैकेनिकल इंजीनियर थे। अपने पिता श्री डॉ. कृष्णचन्द्र शर्मा के स्वर्गवास के बाद अपनी माताश्री की देखभाल के लिए उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली थी और पुणे में ही माँ के साथ रह रहे थे। श्री सौरभ की बालकल्याण और समाज हितकारी कार्यों में गहरी रूचि थी। अपनी मां के साहित्यिक कार्यों में उनका पूरा सहयोग रहा। वे स्वयं साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न थे। इन दिनों वे विकलांग लोगों की सुविधा के लिए एक विशेष मोबाइल डिजाइन करने में व्यस्त थे। उसका काफी कार्य हो भी चुका था पर उनके अचानक यों चले जाने से जो वज्राघात हुआ वह एक बड़ी क्षति ही है। शब्द रंजन की श्रद्धांजलि।

महाराणा मेवाड़ द्वारा अलंकृत विभूतियां

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन के 6 मार्च को आयोजित हुए 34वें वार्षिक अलंकरण समारोह में देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों का सम्मान किया गया। इनमें भारतीय अभिलेखों एवं पाण्डुलिपियों को सहेजने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले जे. पी. लोस्टी को कर्नल जेम्स टॉड, मीडिया कम्युनिकेशन क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाले राहुल कंवल को हल्दीघाटी, कविताओं के माध्यम से सामाजिक चेतना लाने वाले प्रसून जोशी को हकीम खाँ सूर, जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली अमला अशोक रूइया को महाराणा उदयसिंह, उड़नपरी के नाम से विख्यात पी. टी. ऊषा को पन्नाधाय अलंकरण से नवाजा गया।

बालकवि बैरागी

फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने कहा कि स्वाभिमान, बलिदान, आत्मसम्मान एवं वचन पालना के लिए विश्व मंच पर मेवाड़ की विशिष्ट पहचान है। उसी पहचान की परम्परा में फाउण्डेशन का यह समारोह एक विनम्र कड़ी है।

राष्ट्रकवि बालकवि बैरागी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नारी सशक्तिकरण एवं कन्या बचाओ का संदेश दिया।

डॉ. पालीवाल

तेजसिंह तरुण

आकाश चोयल

सम्मानित होने वाली समस्त विभूतियों को मेवाड़ का गौरव बताया और कहा कि पूरे विश्व से मनीषियों को तलाशना एवं उन्हें इतने सहज और अनुशासित तरीके से सम्मान प्रदान करना फाउण्डेशन का एक ऐतिहासिक काम है। यहां पर सम्मानित किए गए मनीषी भारत के राष्ट्रपति तक बने और नोबल पुरस्कार विजेता भी रहे।

प्रवक्ता कवि पंडित नरेन्द्र मिश्र ने फाउण्डेशन के विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी दी और ओजपूर्ण काव्य-पंक्तियों से समारोह का गौरववर्धन किया।

राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त करने वाली विभूतियों में महाराणा मेवाड़ सम्मान डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़, महर्षि हारीत राशि सम्मान प्रो. लक्ष्मी शर्मा एवं पं. नारायण शर्मा 'कौशिक' शास्त्री को, महाराणा कुम्भा सम्मान डॉ. देवीलाल पालीवाल एवं तेजसिंह तरूण, महाराणा सज्जनसिंह सम्मान आकाश चोयल, डागर घराना सम्मान प्रहलादसिंह तिपानिया, राणा पूंजा सम्मान लक्ष्मणलाल डामोर, अरावली सम्मान रजत चौहान एवं सुश्री स्वाति दूधवाल तथा विशिष्ट अलंकरण पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़ को प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ पुलिस थाना का विशिष्ट सम्मान बांसवाड़ा के पुलिस थाना सगानगढ़ को दिया गया। प्रतिभाशाली छात्रों में 48 को फतहसिंह, 14 को भामाशाह तथा 13 को महाराणा राजसिंह अलंकरण दिया गया। फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि इन विभूतियों को सम्मानित कर स्वयं फाउण्डेशन सम्मानित हुआ है। संचालन गोपाल सोनी एवं रूपा चक्रवर्ती ने किया।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 मार्च 2016

हमारी तो हो ली, आपकी भी हो जाय

लोकजीवन में होली की परंपरा से जुड़े कई रंजन हैं। आश्चर्य तो यह होता है कि पूरे देश में ही होली का त्योहार मनाया जाता है। विभिन्न अंचलों में अपने-अपने रंग-ढंग से मनाये जाने वाले इस उत्सव का अंदाज ही ऐसा है कि यह पता ही नहीं चलता, इसका प्रारंभ कहां से, किस रूप में और कब हुआ। अनेकानेक रूपों में होली के जन-रंजन हैं लेकिन सर्वाधिक रूप में रंग-रंजन ही प्रधान है। इस दिन हर व्यक्ति का मुंह न जाने कितने रंगों की, कितनी परतों का दर्शित रूप बनता है। रंग ऊपर रंग, मेल खाये चाहे न खाये पर रंग की रंगदारी चढ़ती रहती है। रंगदार मुखौटे पर मुखौटा चढ़ने का यह करिश्मा एक-दूसरे के प्यार-मोहब्बत तथा भाईचारे का प्रतीक बन गया। मजे की बात यह है कि इस दिन आप कुछ भी सुहाता, अनसुहाता करें, कोई बुरा नहीं मानता। सौहार्द्र और सुखमय वातावरण में होली की ठिठोली मनहूस को भी मसखरा बना देती है। औरतें भी उन्मुक्त मिलती हैं। उनके मन का स्वच्छंद खुल पड़ता है, खिल पड़ता है, खिलखिला पड़ता है।

होली नजदीक से ही नहीं, दूर-दूर से भी खेली जाती है। पिचकारियों से भीतर की रंगीनी बाहर बहर-बहारों में दिखाई देती है। विभिन्न प्रांतों में इस मौके पर विविध नाच, गान, जुलूस, ख्याल, तमाशे, स्वांग, लीला तथा रस-खस के उल्टे-सुल्टे रूप भी खासा आनंद देते हैं। हर मन कुछ न कुछ अनोखा, अजूबा, अनूठा करने की क्रिया में रत रहता है। राजस्थान की रंगीनियों का क्या कहना! यहां तो मनचलों की बहारें, छड़ियों की लड़ियों में लमछराते नर्तकों की गेरें, गेरों में गेरें, घेरों में घेरे और विविध स्वांगों में अपना रूप दिखाते मनवे ठेठ गांवों तक में बड़े मजेदार बने मिलते हैं। सभी जातियों की, गांवों की, समूहों और समाजों की गेर को कोई देखे। अलग-अलग अंचलों के रंग, रसिया फागुण की फटकारों में रात-रात भर फड़केबाजी करते मिलेंगे। कहीं जुलूस रूप में गाते-बजाते गालियों की गुन धुन गमक में सबकुछ अश्लील कहा जाने वाला भी पवित्र शील की शोभा बना दिखाई देगा।

महिलाओं का मंगल मोद भी कम मजेदार नहीं। वनांचलों में खेल-खेल में महिलाएं पुरूषों की परीक्षा लेती हैं। खजूर की टोंच पर नारियल बांध ललकार देती है पुरूष को कि उनके घेरे से कोई जवान मोट्यार निकले और खजूर पर चढ़े। हिम्मत वाले जोश-जोश में महिलाओं के हाथों पीटते, मार खाते अपनी बहादुरी का, शौर्य का, पौरूष का परचम लहराते हैं। होली के रंग हजार हैं। आइये ,उन रंगों में आप सब रंग जाइये। यही अवसर है जब शब्द और रंजन की बहुविध विधियां चौड़े-छाने, गुपचुप अपनी निधियां खोलती हैं, दशार्ती हैं ऊंट की थैलियों की तरह। होली सबकी ठिठोली बने। मनचलों की टोली और घर-घर की रंगोली बने।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन का तीसरा अंक मिला। इस अंक से ही मुझे इस नई शुरूआत की जानकारी मिली है। इसलिए पहले तो खूब सारी बधाई और अनंत शुभकामनाएं।

अंक की सामग्री विविधतापूर्ण है और इसका झुकाव कला-साहित्य-संस्कृति की तरफ है। तुम संपादन करो और यह न हो तो आश्चर्य होता। दादा बालकवि बैरागीजी के बारे में डॉ. पूरन सहगल की छोटी सी किंतु अपनत्व भरी टिप्पणी पढ़कर खुशी हुई। इसे एक स्तंभ के रूप में जारी रख सको तो और भी अच्छा रहे। स्वयं दादा बैरागीजी ने कवि सम्मेलन परंपरा और उसके क्षरण पर बहुत अच्छी तरह प्रकाश डाला है।

मेरे पुराने साथी डॉ. जीवनसिंह के बारे में मेरे अग्रज डॉ. महेन्द्र भानावत का संस्मरण रोचक और पर्याप्त जानकारी भरा है। महेन्द्र भाई ने मणि मधुकर को भी बहुत अच्छी तरह से स्मरण किया है जिन्हें, हिन्दी साहित्य जगत ने बहुत जल्दी विस्मृति के गर्त में डाल दिया है। सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि तुमने पोथीखाना स्तंभ के अंतर्गत नव प्रकाशित पुस्तकों का समुचित नोटिस लिया है और अलग से एक किताब की विस्तृत समीक्षा भी दी है। उम्मीद करता हूं कि तुम्हारे अखबार में किताबों की यह जगह बनी रहेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि यह समाचार पत्र उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए शीघ्र ही शीर्ष पर जा पहुंचेगा। **-डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**

शब्द रंजन के अंक में बालकवि बैरागी का संस्मरण लेख पढ़ मुझे अजमेर में हुए एक राष्ट्रीय कविसम्मेलन की याद हो आई। आपातकाल के हटने के तुरंत बाद आयोजित किये जानेवाले इस कविसम्मेलन में अटलबिहारी वाजपेयी ने नजरबंद मानसिकता से ऊबकर राष्ट्रीय चिंतनधारा को दर्शाती जो ओजभरी कविताएं सुनाई उनमें भारतीय जनजीवन की अंतस से जुड़ी स्वाधीनता की हुंकार थी। श्रोता समुदाय में वे कविताएं खूब सराही गई।

उसी मंच पर बालकवि बैरागी ने भी राष्ट्रीयधारा से जुड़ी फड़कती कविताओं से सम्मेलन स्थल को ओजस्वी बना दिया। यही नहीं, श्रोताओं की मांग पर उन्होंने श्रृंगार रस की कविताएं सुनाईं। इस रस में वे इतने आत्मविभोर हो गये कि जैसे हम आजादी का उत्सव मना रहे हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने स्त्रीयोचित भावमुद्राओं में जो रसचित्त दरसाया वह कल्पनातीत था और उनकी कविता की एक-एक शब्द-पंक्ति को सार्थक कर रहा था।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि उस सम्मेलन में कई महत्वपूर्ण दायित्वों से मेरा जुड़ाव रहा। मेरे साथ भरतपुर के दाऊदयाल गुप्ता भी थे। मैंने कई अखिल भारतीय कविसम्मेलनों को देखा, सुना है। वहां कवि और कविता प्राय: जुदा-जुदा होते हैं। बालकवि बैरागी जैसे कवि निराले ही हैं जो अपने कवि को कविता बनाकर रस-सिद्ध हुए मिलते हैं। **-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर**

दशामाता व्रतानुष्ठान

- डॉ. कविता मेहता

महिलाओं से जुड़े व्रतानुष्ठान में दशामाता व्रत अनुष्ठान भी मुख्य है। होलिका दहन के पश्चात एकम से दशमी तक का समय 'अगता' कहलाता है। इन दिनों औरतें पीसने, कातने, बुनने तथा नहाने धोने संबंधी कोई काम नहीं करती हैं।

यही समय दशामाता का भी है। इन दस दिनों में औरतें दशामाता का व्रत करती हैं। दशामाता से जुड़ी कहानियां सुनती हैं और तदुपरांत ही अपना व्रत खोलती हैं।

किसी स्थान विशेष पर, दीवाल पर दशामाता का अंकन कर उसकी विधिवत पूजा की जाती है। प्रतिदिन पांच कहानियां कही जाती हैं और कहानियां समाप्त होने पर दशामाता संबंधी गीत गाये जाते हैं। विवाह के बाद आने वाली पहली होली पर बहू को ससुराल में दशामाता की वेल धारण कराई जाती है। इसके बाद से बहू प्रतिवर्ष व्रत करने प्रारंभ कर देती है। दशामाता से तात्पर्य उस देवी से है जो गृहदशा ठीक बनाये रखती है।

दशामाता की कहानियां कहने वाली विशिष्ट महिला होती है जिसे अधिकाधिक कहानियां याद रहती हैं। सुनने वाली औरतों में से ही कोई औरत कहानी सुनाती हुई 'हुंकारा' देती रहती है। यह हुंकारा या तो दशामाता के नाम से दिया जाता है या फिर जिस नाम से कहानी कही जाती है उस कहानी के नाम से दिया जाता है।

अंतिम दिन दशमी को औरतें नये पारंपरिक वस्त्राभूषण में सुसज्जित हो दशामाता के स्थान पर एकत्रित होती हैं। अपने-अपने घरों से इस दिन प्रात: सभी औरतें पूजा का थाल सजाकर लाती हैं। थाल में घी का दीपक, जल का लोठा, आखे (अनाज के दाने), कुंकुम, कूलर, सुपारी, लच्छा, पान, मेंहदी, दही, काजल, पैसा तथा दशामाता के लिए बनाये गये विविध कलात्मक आभूषण होते हैं। ये आभूषण हल्दी मिले गेहूं के आटे से औरतें स्वयं बनाती हैं।

इन सारे उपकरणों से पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है। दशामाता के नाम

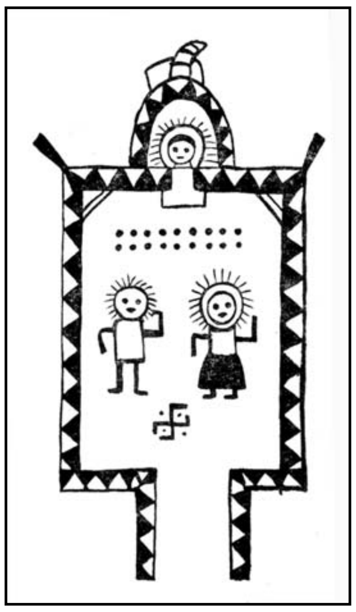

का पीपल पर कुंकुम, मेंहदी, काजल की दस-दस बिंदियां लगाई जाती हैं और अपनी छोटी अंगुली (कनिष्ठिका) से पींपरा (पीपल) का छिलका उतार कर घर लाया जाता है।

माताजी के स्थान पर कहानियां कही जाती हैं और दशामाता का बड़ा थापा अंकित किया जाता है। थापे विभिन्न प्रकार के आंचलिक परिवेश लिए होते हैं।

परिवार में सुख-शांति, ऋद्धि-समृद्धि देकर प्रत्येक प्राणी को अवदशा में बचाती है। आड़ीवाड़ी कहानी में यह बात इस प्रकार सुनने को मिलती है-

पीपल पूजै पनौती,
भर-भर मोत्यां थाल।
दुख दोरम ने रंडापो,
तीनीकांने टाल।।

मेवाड़ क्षेत्र में मैंने दशामाता के दिनों में विभिन्न स्थानों से कहानियां कहती महिलाओं से जो कहानियां लिपिबद्ध की हैं उनमें से कुछ कहानियां इस प्रकार हैं-

(1) नल दमयंती (2) डोकरी ने राम लछमण (3) गणेस्या री करामात (4) भूरो खाती (5) कोमानेतण (6) चटोकड़ी लुगाई (7) पथवारी (8) राम लछमण री चंटी (9) फूल उगड़ती छोरी (10) अठोतर कंवर (11) पदम देस री पदमणी (12) डोकर्या नगरी (13) वदातामाता (14) कूकड़ माकड़ (15) हाथी-राजा (16) दशामाता डाड़ाबावजी।

ये कहानियां न केवल सामाजिक, सांस्कृति, धार्मिक एवं पौराणिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण हैं अपितु मनोवैज्ञानिक एवं लोकशिक्षण, अनुरंजन तथा स्वस्थ कला

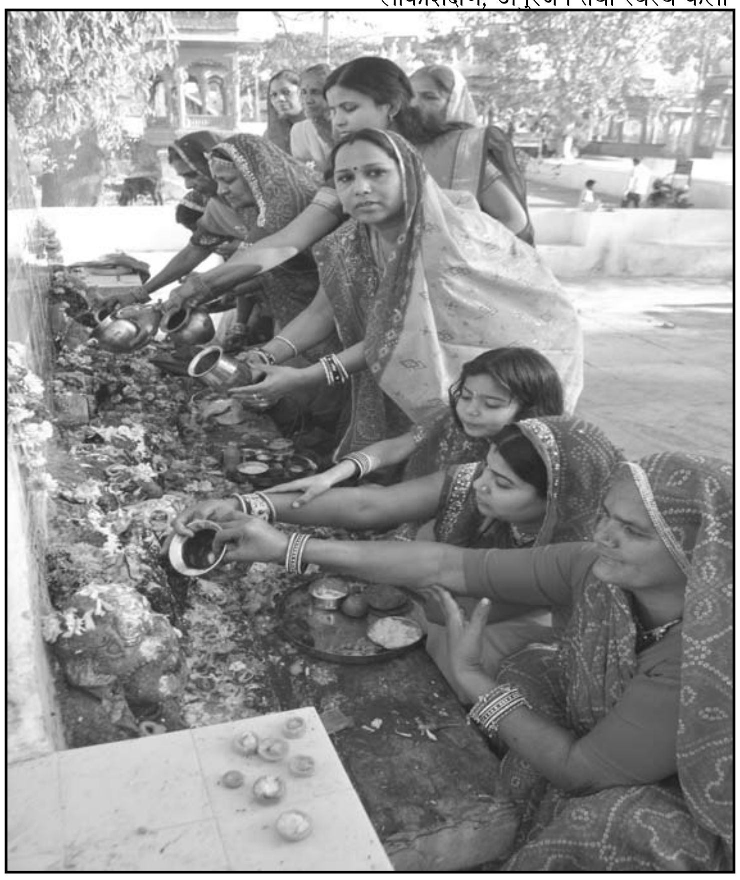

सौंदर्यमय जीवनधर्मिता के लिए भी उपयोगी एवं आदर्श हैं। प्रत्येक कहानी में वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी विशाल जीवन दृष्टि की उदात्त भावना मिलती है।

अन्य व्रत कथाओं की तुलना में दशामाता की कहानियां आज भी सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्राणवान बनी हई हैं। कई विधवा-बेसहारा महिलाएं इसी दशा देवी के सहारे निश्चिंत हो अपना जीवन यापन कर रही हैं।

लेखिका की शोधकृति दशामाता लोकव्रत संस्कृति दिल्ली के शुभद्रा पब्लिसर्स से प्रकाशित है।

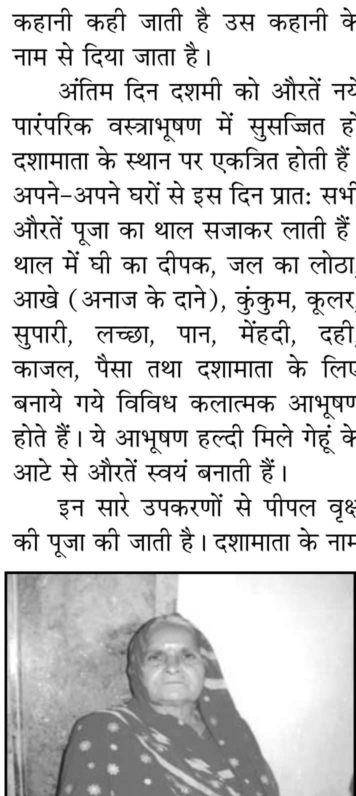

उदयपुर की पानेरियों की मादड़ी के खमेसर महादेव मंदिर परिसर में विगत 60 वर्षों से दशामाता की कहानियां सुनातीं चुन्नीबाई (80) और महिला समुदाय।

होली पर मुजरो करूं भर-भर धोबा रंग

स्तुति :
गोबर स्याही, हल कलम, कागज खेत अथाह।
फसलां आखर शारदे, जल पाताल भराह।।
होली पर मुजरो करूं, भर-भर धोबा रंग।
रग-रग में रंगत चढ़े, भग-भग भीगे अंग।।

स्मरण :
नंद! तुम्हारी सहज याद में रोते नहीं, बिलखते हैं।
हंसी ठहाके तेरी मेरी करते और महकते हैं।।
आतुर आलम शलभदा, विश्वंभर ओंकार।
सुधा नेम नागर सरूप बिन महफिल बेकार।।

अरविंदसिंह मेवाड़ :
यह धरती है ताप की, नहँ कोई संताप।
जहां कमल है मल नहीं, वह मेवाड़ प्रताप।।

वसुंधरा राजे :
गाजेबाजे राजपथ, रंग राजे रजथान।
मामूली मूली नहीं, आन बान की शान।।

गुलाबचंद कटारिया :
जो गुलाब है, कांटा तो होगा ही होगा।
भोग रहे कांटा भी वो तुमने क्या भोगा।।

किरण माहेश्वरी :
सागर देता बूंद कहां बनती मोती है।
राजनीति में सूरज की भी किरण नहीं होती है।।

अशोक वाजपेयी :
रंग देखो नट रंग में, पत्ता पतझड़ होय।
नींबू ही चोखे लगे, कद्दू बाट न जोय।।

प्रयाग शुक्ल :
लड्डू बाटी संग में, छुनछुन घुघरू ताल।
दाल मिले या न मिले, हाल न हो बेहाल।।

कमलकिशोर गोयनका :
प्रेमचंदजी कह गये, अच्छे दिन सुप्रभात।
ढोल मजीरे स्वयं ही, ठुमकेंगे मटकात।।

चन्द्रसिंह कोठारी :
स्मार्ट सिटी के लिए बजेगी जब भी सीटी।
हम अलर्ट हो जायेंगे करने को पीटी।।

रोहित गुप्ता :
जनता के हित जो करे, सिर आंखों पर आय।
रोहित के हित में लिखे, उदित मुदित अध्याय।।

शिवकिशोर सनाढ्य :
अब भी शिवा किशोर हैं, दमखम देते ताल।
पारदर्शी समदर्शी हैं फूंक देत ज्यों व्याल।।

निहाल अजमेरा :
नौनिहाल की उम्र में, बूढ़े हुए निहाल।
जिनके हाल बेहाल थे, उनकी बदली चाल।।

पंकज शर्मा :
पंकज से निखरे हो, नखरेबाज न होना।
सबकी सुध लो, छोड़ो अब अपना ही रोना।।

गोपाल शर्मा :
ग्रेस में मिली कांगरेस को टोप करोजी।
बातों का तज ढोल, करो कुछ ठोस करोजी।।

विजय वर्मा :
इतना सारा जाना, भरा खजाना सुनलो।
किंतु नहीं उपयोग हो रहा मन में गुनलो।।

बालकवि बैरागी :
बोल खरे, नखरे नहीं, अपनी मस्ती मौज।
बालक बनड़ा से लगैं, कविता करते रोज।।

पूरन सहगल :
पीपाजी ने धो दिये सारे पाप प्रकल्प।
पूरणजी अब हो गये महिमावंत विकल्प।।

बसंत निरगुणे :
संत बसंत बने फिरे, गुणे निरगुणे होय।
कबीरा यह कैसी उलट, समझ न पावे कोय।।

मालती शर्मा :
कभी बाल मन प्रौढ़ बन बूढ़ा लगे शरीर।
तीन तार दीदी दिखे, लोकमनीषा तीर।।

देवेन्द्र 'इन्द्रेश' :
हाथों के बल रेंगते, घुटनों के बल दौड़।
अली गली से घूमते, सिक्स लेन की रोड़।।

एस. एस. सारंगदेवोत :
हर-हर गंगे सब जगह, गंग कठौती मांह।
रग-रग में रंग बहुत है, सारंग में रंग नांह।।

माधव हाड़ा :
पचरंग चोला पहन सखि, कौन सखा इतराय।
अलगोजा में बांसुरी, फटा बांस मुलकाय।।

देवकर्ण सिंह :
डींगल का गळ डींगरा, रूपाहेली रंग।
दोहे के होदे चढ़ै, ज्यों शिवजी के भंग।।

हेतु भारद्वाज :
अवसर अक्सर ना मिले, अक्स बने नहीं रोज।
अक्षर क्षर होते रहे, धरे रह गये पोज।।

अमरसिंह राठौड़ :
शाखाएं होती वहीं, अंगद बनते गोड़।
ठौड़-ठौड़ होते नहीं, अमरसिंह राठौड़।।

गिरिजा व्यास :
तंत्र ढील में फंस गया, समय-समय की बात।
भावड़ आवे देखने, घात और प्रतिघात।।

अशोक गहलोत :
राजा भोला रह गया, प्रजा बड़ी चालाक।
प्रजातंत्र है, धौंस नहीं किंतु चलेगी धाक।।

प्रीता भार्गव :
कवयित्री है जेल में, गये छुड़ावन लोग।
कविसम्मेलन कर दिया, हांसल लगा न भोग।।

कैलाश मानव :
ध्यान मग्न कैलाश पर, नारायण मिल जाय।
सागर बड़ा प्रशांत है, कैसे गोते खाय।।

राजेन्द्रमोहन भटनागर :
सर-सागर साहित्य के, घर-गागर के तान।
रोयल-टी के आसरे, भरते कागज थान।।

भूपेन्द्र दक :
लाखों गांवों में लघु, एक गांव कानोड़।
रतन जतन होता रहे, मोड़ बड़ा बेजोड़।।

नरेन्द्र व्यास :
शीतकाल में गोवा का गर्वीला रूख है।
कांप उदयपुर की असह्य बेटी का सुख है।।

देव कोठारी :
खीचड़ी है बेमेल की, किन्तु स्वाद भरपूर।
सब्जी सरसों की बनी, कटहल मोतीचूर।।

कमर मेवाड़ी :
दाल भात मूसल वही, खीर पकोड़े मित्र।
मंच वही, आसन वही, गंध न देता इत्र।।

श्रीकृष्ण 'जुगनू' :
लपक-लपक कर देत है, झपक-झपक परगास।
रुई को धुनते हुए, सूंघे फूल कपास।।

भगवतीलाल व्यास :
शहर स्मार्ट हो गया अचानक, हमही हैं ठंडे बस्ते में।
कविता कथा व्यंग्य कछुए पर, लदे रेंगते हैं रस्ते में।।

लक्ष्मीनारायण नंदवाना :
लाड़लड़ाने की उमर, गई लड़ाते बीत।
अब वकील बनकर लड़ो, खोलो पुन: अतीत।।

राजकुमार जैन :
बीमा की, साहित्य की, सीमा बड़ी असीम।
मुश्किल है फिर भी सरल मोबाइल की सीम।।

रजनी कुलश्रेष्ठ :
कुतर-कुतर कविता करी, शाम ढली परभात।
भरी दुपहरी भी गई, रामकली की रात।।

ज्योतिपुंज :
युग-धारा में बह गई, जुग-जाजम की फांस।
मिरचों की धूनी बिना, कैसे आई खांस।।

महेन्द्र भानावत :
हिम्मत नह हारी कभी, हार न खाई लेश।
अपने बलबूते किया, जैसा चाहा भेष।।

श्रीकृष्ण शर्मा :
भ्रमित न हो तू भायला, चन्दरिका चालाक।
झांसे में तुझको रखे, रहे दूसरे ताक।।

इकबाल सागर :
एक बाल ही बहुत है, व्यर्थ हजारों बाल।
गधा पालना भी कठिन, ओढ़ शेर की खाल।।

किशन दाधीच :
यह नगरी बेदम लगती है, उड़चल गधा हंसकी चाल।
गीत प्रीत उल्टे लटके हैं, देख चलें बूंदी के हाल।।

विद्याविंदुसिंह :
प्रतिदिन ही त्योहार है, प्रतिदिन मोतीचूर।
प्रतिदिन ही लिखती रहो, यश पाओ भरपूर।।

साहित्य अकादमी :
लावारिस घोड़ा खड़ा, उलझी बांडी पूंछ।
प्रभुदयाल देखे खड़ा, किसने काटी मूंछ।।

जगदीश तिवारी :
दो पटरी का गेज एक ही मीटर ब्रोड है।
गजल-गीत की झुनझुनिया पर अपर लोड है।।

सुरेश गोयल :
समाचार देने में जिनके हो जाते बेहाल।
साठ इंच सीने का ट्वीटर देता प्रात:काल।।

उग्रसेन राव :
आये थे सब सो गये, मूछ मरोड़ीलाल।
देखा तो जो बच रहे, ठनठनपाल गोपाल।।

शैलेष व्यास :
यूं तो है पहली पहल, और न कोई तोड़।
मच्छर पंखा झालता, देता ठसक मरोड़।।

देवदत्त शर्मा :
स्वर सरिता दोनों नहीं, बंधते सुनलो यार।
बंद किये आंखें चलो, यह नश्वर संसार।।

सोहन धींग :
खेती रेती हो गई, हिम्मत हो गई पस्त।
खूंटी निगली हार को, उदय हो गये अस्त।।

रतन शाह :
राजस्थानी रेंटल्यो, ढीली पड़ी कबाण।
कुकड़ी उलझी ताकरे, मचगी खेंचाताण।।

जीवनसिंह :
अलगोजा अलवल बजे, शंख सुने नहीं तान।
राम नजर नहीं आत है, रावण गूंजे गान।।

नंद भारद्वाज :
बिडला भेजा है सखी, झेल सके तो झेल।
भग्न हुए अवशेष वे, लपक झपक का खेल।।

वेद व्यास :
बार-बार कुरसी मिले, बिगड़े बने नवाब।
दादा, वादा कर गये, वादी देखे ख्वाब।।

राजेन्द्रप्रसाद गोयल :
यह सच है, सब ही डरते हैं और डराते भी।
सबकी आंखों में, कुछ तराते और तरात भी।।

आशीष अग्रवाल :
मेडीकल सेवार्थ हित, लिखा उमरड़ा नाम।
गांवों की सुध में लगे, आशिष दे भगवान।।

भैरूसिंह राव :
सूता तो जागा लगै, जागा सूता नाय।
क्रांति गई कांति गई, सिंह दहाड़े गाय।।

शांतिचन्द्र बाबेल :
तुलसी का पौधा उगा, एक हथेली मांय।
दूजी में थैली भरी, यां में अचरज कांय।।

अनिल भानावत :
बिन ज्योतिष के जी गई, कई पीढ़ियां हार।
अब स्वामीजी कर रहे, सबका बेड़ा पार।।

प्रमोद सामर :
राजनीति में पहन के, महावीर की गोळ।
म्यान पड़ी तलवार में, चमक दे रहा जोळ।।

किरणमल सावनसुखा :
दानवीर सब हो गये, भामाशाह प्रधान।
धन दौलत की पूछ है, गोबरचंद महान।।

फतहलाल नागौरी :
मेवाड़ी पगड़ी गई, हेट बनी पहचान।
ठोकर से ठाकर बने, भाटे से भगवान।।

गौतम दक :
भाग्य डूंगले के लिखे, बड़ीसादड़ी जाय।
दक का उल्टा कद बना, विधि का अचरज पाय।।

भूपेन्द्र चौबीसा :
खुल्लमखुला लिखते नाड़ा टूट गया है।
अरे भूपजी! फिर भी कितना छूट गया है।।

तुक्तक भानावत :
पैसा कौड़ी ना फले, फले तो आशीर्वाद।
लाख टके की बात है, मत कर वाद विवाद।।

सोहन भानावत :
घालमेल ऊपर चले, खींचो कान कमान।
पब्लिक की पड़ताल से, फेरो अपना ध्यान।।

राजेन्द्र विरानी :
जिनको काले कर रहे, वे हो गये सफेद।
बहुत बड़ा धोखा हुआ, और इसी का खेद।।

जितेन्द्र मेहता :
सबही को मैं कर सकूं, हे अलर्ट भगवान।
स्वांस मिले संतोष की, और जान में जान।।

शिव मृदुल :
अब लोठा और डोर नहीं है, बोतल का पानी।
किस दुनियां में रहते भैया, चबा रहे गुड़ धानी।।

बंशी साकेत :
अच्छा था स्थापित कभी, सृजन मंच संवाद।
उपन्यास कविता कथन, अनुशासित मर्याद।।

पवन कौशिक :
वेग रहे कंट्रोल में, खुली रहे दोउ आंख।
घोड़ा उतना ही चले, जितने फैले पांख।।

ऋषभ भाणावत :
छोटी चिड़िया से उड़ो, नभ के चारों ओर।
किंतु सदा भूलो नहीं, धरती ही है छोर।।

सरिता जैन :
फूली अचानक धौंकनी, देख हवा का जोर।
दांत कटा टायर फटा, भागा दौड़ा चोर।।

शब्द रंजन :
यूं तो पूरी दुनियां प्यारे, शब्दों का ही रंजन है।
किन्तु हमारे घर में न्यारे दोनों का ही रंजन है।।

शुभाकांक्षा :
जिसकी हो ली उसकी भी हो, पिचकारी के संग।
अंग-अंग में बस रंग जावे, बेबस के भी रंग।।

बुरा न मानो :
खांड खोपरे का बुरा, खाओ रोटी चूर।
होली पर माने बुरा, उसका उतरे नूर।।

26 मार्च को 83वीं जयंती पर ओंकारश्री से जुड़ी दो स्मरण-टीप :

भीड़ भरे चौराहे ऊपर किसे पुकारें हम

महेन्द्र मुझे वे कविता-पंक्तियां सुनाते हैं जो मृत्यु के दो घंटे पहले ओंकारश्री ने उनको सुनाई थी-

ऊपर भी हम नीचे भी हम /
आगे भी हम पीछे भी हम
दायें भी हम बांयें भी हम /
सूजे-सूजे पांव हमारे, कहां थके हम
भीड़ भरे चौराहे ऊपर
किसे पुकारें हम।

यह मृत्यु-पूर्व की साहस भरी कविता उनके जीवन-संघर्ष का शायद सारांश भी है। दरअसल कोई भी लेखक कहां थकता है? ओंकारजी को मैं दूर-दूर से ही जानता रहा। उनका जन्म 26 मार्च 1933 को बीकानेर का है और निधन 11 नवम्बर 2013 उदयपुर का।

वे 1966 में उदयपुर राजस्थान साहित्य अकादमी के राजस्थानी विभाग में सेवाएं देने आए थे। उदयपुर आने का आग्रह उनसे मंगल सक्सेना ने किया था जो बाकानेर के ही थे और उस समय राजस्थान साहित्य अकादमी के निदेशक पद पर कार्यरत थे।

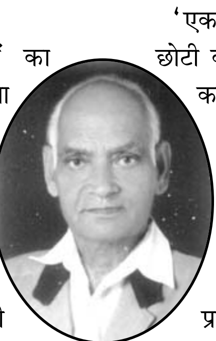

तब तक अकादमियों का भाषावार विभाजन नहीं हुआ था लेकिन राजस्थानी, संस्कृत, ब्रज, उर्दू बाद में सिंधी, पंजाबी सभी भाषाओं ने अपने-अपने विकास के लिए अलग-अलग अकादमियों की दावेदारी की और वह पूरी हुई। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की स्थापना के साथ ही ओंकारजी प्रथम सचिव होकर बीकानेर चले गए।

उदयपुर के अपने पहले प्रवास में वे मेरे साथ सहज नहीं हुए। यह तनाव शायद हिन्दी राजस्थानी की प्रतिस्पर्धी स्थितियों के कारण हो या अन्य किसी मनोग्रंथि के कारण, इसे तलाश करने की मैंने कोई जरूरत नहीं समझी। यह उसी का नतीजा था कि ओंकारश्री की जिन्दगी या कि रचनाधर्मिता के उतार-चढ़ावों के बारे में सिलसिलेवार कुछ नहीं जान सका। बाद वाले कुछ वर्षों में वे और मैं आयु के ढाल पर आ गए और उनका उदयपुर में स्थायी निवास हो जाने के कारण ज्यादा मुलाकातें संभव हुई। मैं यह समझ सका कि उनकी जिन्दगी एक रचनाकार की तनावग्रस्त जिन्दगी है। बकौल रवीन्द्रनाथ ठाकुर- 'जिसे जो और जैसी दुनिया चाही थी वह नहीं मिली, जो मिली वह चाही नहीं।'

मुझे लगता है कि एक रचनाकार बनने के सपने ने ही इस युवा स्नातक को कभी स्थिर होकर न कोई नौकरी करने दी और न ऐसा लेखन जिसने यश और अर्थ दिया हो या आत्मानंद। तब भी लेखन और साहित्यिक पत्रकारिता के लिए एक दीवानगी की सीमा तक वे लगे रहे। ओंकारजी ने राजस्थानी तथा हिन्दी; दोनों भाषाओं में लेखक और संपादकीय लेखन की जिम्मेदारी निभाई और पुस्तक-संपादन से लगातार जुड़कर डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी पर एक वृहद अभिनंदन ग्रंथ 'सृष्टि की दृष्टि' संपादित किया।

यह उल्लेखनीय है कि इस महत्वपूर्ण ग्रंथ की तैयारी के समय ओंकारजी का स्वास्थ्य मामूली अच्छा ही था जिसका वे लगातार उपचार कराते रहे तब भी वे अपने संपादन कार्य के प्रति अद्भुत धैर्य, निष्ठा और विश्वसनीयता के साथ लगे रहे। अपनी इस संलग्नता के कारण ही ओंकारश्री विधिवेत्ता लक्ष्मीमल्लजी के बहुआयामी व्यक्तित्व को अधिक प्रभावमय बनाने में सफल हुए। राजस्थानी की प्रबल पक्षधरता के बावजूद हिन्दी के प्रति उनका मन जरा भी कपट या कृपणतापूर्ण नजर नहीं आता। इसका प्रमाण उनकी 1969 में छपी देशी कविता पुस्तक 'एक पंख आकाश' है। वह समय हिन्दी कविता के लिए उर्वरा और प्रयोगधर्मी था। ओंकारजी ने उत्साहपूर्वक कम से कम शब्दों और वाक्यों की प्रयोगधर्मी कविताएं प्रकाशित करवाई। अपने नयेपन और बौने रचना-प्रबंधन के कारण वे दिल्लगी का कारण भी बनीं। कई कवि विद्वानों ने इन्हें कविताएं नहीं, विचारों के हिस्से मानकर पढ़ा।

'एक पंख आकाश' की छोटी-छोटी कविताओं के बाद मैंने उनकी कविताएं नहीं देखीं। राजस्थानी में भी नहीं। कवि रूप में वे चर्चित भी नहीं रह सके लेकिन बातचीत में मैं उनकी प्रतिभा का सघन परिचय पाता था। वे विद्वानों के प्रशंसक तथा गुण ग्राहक थे। परनिंदा में रस लेना उनका स्वभाव नहीं था। ओंकारजी ने अपना जाति दम्भ तोड़ने के लिए 'पारीक' लगाना जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन के समय छोड़ दिया। उनकी पुत्री ने जो जीवनवृत्त भेजा उसमें लिखा- 'लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर आपने जाति शब्द हटाकर यज्ञोपवित त्याग दिया।

पुरातन इतिहास और परंपराओं की ज्ञान-गरिमा का बखान करते हुए ओंकारश्री 'पुरातन पंथी' नहीं थे। उन्हें इसका जरा भी क्लेश नहीं था कि वे धनीमानी श्रेणी के विशिष्टजन नहीं हुए। कसी किसी प्रसंग में उन्होंने इसका लालच नहीं दिखाया।

ओंकारजी का उत्तर-जीवन असाध्य शारीरिक रोगों से घिरा रहा लेकिन वे 'जीना' चाहते रहे। अंत के दिनों की मुलाकात का वृतांत सुनाते भाई भानावतजी ने कहा- 'उन्होंने विश्वंभर व्यास से कहा कि तुम्हें मेरा इंटरव्यू लेना है जिसमें मैं कई बातों का खुलासा करूंगा।'

दुर्भाग्य कि जो ओंकारश्री विश्वंभर व्यास को अपनी आयु का अंतिम साक्षात्कार देना चाहते थे, दोनों एक ही दिन, एक ही समय शवदाह स्थल पर काल-अग्नि को समर्पित हो गए। राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं की कृपणता देखिए कि दोनों मित्र-लेखकों के लिए हमारी अकादमी को दो शब्द तक नहीं मिले। दोनों लेखकों का उत्तर-जीवन त्रासदायक स्थितियों के बीच गुजरा लेकिन जिस स्वाभिमान और गरिमा के साथ वे अंत तक जिये वह उनकी यशगाथा को दुर्लभ और अविस्मरणीय बनाता है।

-नंद चतुर्वेदी

अनोखे अंदाज के यारबाज

ओंकारश्री के कई रूप मिलते हैं। इन रूपों में जातपांत के बंधन तोड़नेवाले, अपने स्वाभिमान का सोटा चलानेवाले, हिंदी-राजस्थानी के रूढ़ लेखन को पूठ दिखानेवाले, अपने मरोड़ की मोठ पकानेवाले, खरीखोटी मसखरी मारनेवाले, यार-दोस्तों के साथ दांत कूटी करनेवाले, पूरी उम्र संघर्ष की तीखी धार पर दौड़नेवाले ओंकारश्री जहां जब भी मिले अपने अनूठे अंदाज में ही मिले।

मेरा उनका परिचय 1955 से रहा। बीकानेर में वे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावतजी के सहपाठी-दोस्त थे। वहीं मैं और भी दोस्तों से प्रभावित हुआ। उनमें मंगल सक्सेना ने भी उदयपुर को अपना स्थायी वास बना लिया। ओंकारजी की हिंदी-राजस्थानी की शब्दशक्ति का कोई जोड़ नहीं। उनमें सर्वथा नया और कुछ करने की जबर्दस्त जिजीविषा रही। कुछ भी लिखने के लिए उन्हें तैयारी नहीं करनी पड़ती।

सर्वथा नई कविता वाली उन्होंने 'एक पंख आकाश' पुस्तक में एक पंक्ति से लेकर छह पंक्ति तक की कविताएं लिख अपने को नई कविता का उद्घोषक माना। सच तो यह है कि वे अनोखे अंदाज के हेंकड़ीबाज ही अधिक थे।

उनकी वाक्शक्ति बड़ी बुलंद, हुंकार भरी, चेतावनी के चुंगट्ये भरती रही। लंबी बीमारी के चलते उन्होंने कोई परवाह नहीं की और रोग को भी राग की तरह अपना लिया। पत्र-पत्रिकाओं तथा अखबारों में छपे लेख-खबरों की कटिंग्स तथा कतरनें इकट्ठी कर वे अपने को विश्व का अनूठा कबाड़शाह ही मानते रहे। प्रतिदिन डायरी लिखते और कहते कि उन्हें खंगालने पर विस्फोट होगा। कई चेहरों के मोहरे बेलगाम होंगे।

उनकी मृत्यु पूर्व मैं डॉ. विश्वंभर को उनसे मिलाने ले गया। हम तीनों की बड़ी देर तक अगजग भरी गप्पबाजी होती रही। मुझे उनके निधन की सूचना आबिद अदीब ने श्मशान से दी तो मैं तत्काल उठ खड़ा वहां पहुंचा। पहुंचते ही नंदबाबू को फोन किया। बोले- कहां से बोल रहे हो? मैंने कहा-अशोकनगर श्मशान से ओंकारश्री नहीं रहे। यह सुन गंभीर मुद्रा में वे बोले- मैं भी श्मशान से बोल रहा हूं।

मैंने पूछा-क्यों क्या हुआ तो वे बोले- विश्वंभर भी नहीं रहे। फिर न वे कुछ कह पाये और न मैं ही। अनूठे ओंकारश्री ही नहीं थे, विश्वंभर भी अपने ढंग का अनूठा दोस्त था। यों नंदबाबू, मैं स्वयं, कमर मेवाड़ी और आलमशाह खान भी कोई सरल चित्त के सहज दोस्त नहीं, लूठे और अनूठे ही माने गये।

- म. भा.

चूरू में 'मेरा गांव और मैं' का लोकार्पण

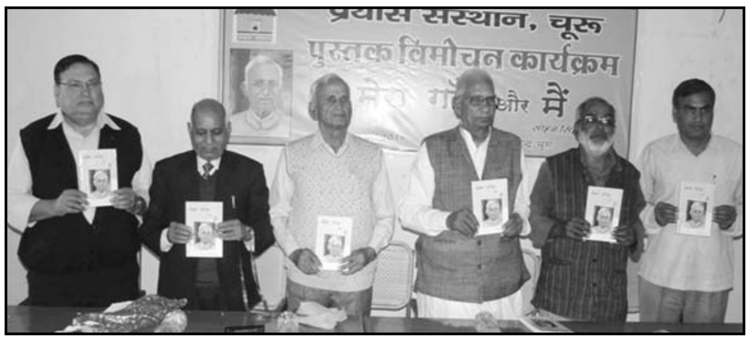

चूरू में वहां के प्रयास संस्थान, की ओर से हुए समारोह में शिक्षाविद् सोहनसिंह दुलार की पुस्तक 'मेरा गांव और मैं' का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार हेतु भारद्वाज, ईश मधु तलवार एवं राजाराम भादू के हाथों हुआ।

इस मौके पर हेतु भारद्वाज ने कहा कि ग्रामीण जीवन को लेकर लिखने वाले बहुत सारे लेखक गांव के बारे में अधिक नहीं जानते लेकिन दुलार ने ग्रामीण जीवन को जीकर यह प्रामाणिक पुस्तक लिखी है। जब कथ्य में लेखक स्वयं मौजूद होता है तो आमतौर पर वह निष्पक्ष नहीं रह पाता लेकिन दुलार इस आत्ममुग्धता से बचे हैं। उन्होंने कहीं भी अपने को बढ़ाचढ़ा कर पेश नहीं किया है।

राजाराम भादू ने कहा कि गांधी दर्शन को गांव के केंद्र में रखी जाने वाली यह पुस्तक विद्रोह की चीख है। बहुलतावादी समाज और वैसे ही लोकतंत्र में समूचा गांव एक भावनात्मक सूत्र में बंधा रहता है। उसकी सामूहिक चेतना व स्मृति ने पुस्तक को महत्वपूर्ण बना दिया है।

ईश मधु तलवार ने कहा कि गांव के बहाने दुलार ने अपनी पुस्तक में पूरी दुनिया की बात की है। गांव का आदमी गांव को मां की तरह याद करता है और स्मृतियां पूरे जीवन छाया की तरह उसके साथ चलती हैं। यह पुस्तक तत्कालीन समय की सामाजिक व्यवस्थाओं, आंदोलन तथा शैक्षणिक चेतनाओं पर प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करती है।

लेखक सोहनसिंह दुलार ने जीवन के विभिन्न अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने जो जीया, उसे ईमानदारी से शब्दों में उतारने की कोशिश की है। समारोह की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ एमडी गोरा ने की। इस दौरान भंवरसिंह सामौर, कमलसिंह कोठारी, जयसिंह पूनिया तथा कमल शर्मा सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार एवं नागरिक मौजूद थे।

नेता की होली, भौजाई की ठिठोली

रंग में व्यंग्य

होली की मस्ती में जैसे ही चंग पर थाप पड़ती है, लोग फुदकने लगते हैं। इन्द्रधनुषी रंग बरसने लगता है। चुनर वाली भीगने लगती है। यहां तक कि कबर में पैर लटकाये बुढ़ऊ भी मदमस्त हो साठा से पाठा हो जाता है। देवर-भौजाई की ठिठोली होली की मस्ती में रंग बरसाने लगती है। होली के आलम में सभी बौरा जाते हैं। होली की मस्ती में देश की भौजाइयां अपने देवरों को मोबाइल से संदेश भेज रही हैं।

ऐसे में हमारे नेताजी औंधे मुंह घर में लुढ़के पड़े हैं। उनको आलाकमान से संकेत मिला है कि होली के त्योहार के बाद मंत्रीमंडल में बड़ा फेरबदल होगा, जिसके कारण नेताजी की कुर्सी छिन जायेगी। उन्हें संगठन को मजबूत करने के लिए भेजा जाएगा। इसलिए होली का हुड़दंग उन्हें रास नहीं आ रहा है। एक जमाना था जब नेताजी होली पर खूब मस्ती किया करते थे। होली की मस्ती में भांग घुटवाते थे, पर इस बार तो अपनी चांद घुटवाकर आए हैं, आलाकमान से।

क्या करें, देश के कांडों, प्रकांडों ने नेताओं का जीना हराम कर दिया है। कहते हैं, नेताजी तो बहुत चम्पी कर रहे हैं कि हम मंत्री की कुरसी पर बैठे-बैठे ही पार्टी की तेल मालिश करते रहेंगे और पार्टी को मजबूत बनाते रहेंगे लेकिन दाढ़ी वाले आलाकमान नहीं मान रहे हैं और हमें लुढ़काकर ही दम लेंगे। वे कहते हैं कि मेरे लाल, तुम पार्टी को तेल चुपड़-चुपड़ कर अपनी तरह मजबूत कर दो।

पार्टी की मजबूती के चक्कर में नेताजी खुद घनचक्कर बन गए हैं। इधर नेताजी टसुए बहा रहे थे उधर उनकी परम प्रिय भौजाई अपने देवर से ठिठोली करने उनके घर आ धमकी। अरे, नेता लाला, काहे औंधे मुंह पड़े हो। तुमें का पतो नाय, होरी आय गयी है और तुम होरी में पतझर बने बैठे हो। कुछ मौज-मस्ती करौ लाला।

नेताजी ने कहा- अरे भौजाई, हमें नाय छेड़ो। हमरो जी तो बैसई ठीक नाय है। तुम्हारी जे चुहल हमें अच्छी नाय लग रही है। चलो परे हटो। अरे भौजाई तुमें पतो नाय, होरी के बाद हमारी जे कुरसी छीन लेंगे। पार्टी तो बैसई मजबूत है, बामें हम का तेल चुपड़ेंगे।

भौजाई ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- का जे बई आका हैंगे, जिनको सीनो छप्पन इंच को है और जो तुम्हें अपनो पूत मानते थे। अरे, लाला जे तो राजनीति है, जामें कबहुं तो राधे स्याम बोली जात है, कबहुं सीता राम। जा बखत तौ तुम्हारी पतित पावन हो रही है। अब लाला बेऊ का करें। उनने कह तो दई कि सफाई रखो। जहां सोच वहां शौच। घर में ही करौ, बाहर मत जाओ। अब जे तो देश की जनता है, सोचे या शौच करें। बार-बार कह रहे हैं आलाकमानजी हम देश की सफाई करें। तुम घर की सफाई करो।

लेकिन यह ना शुकरी जनता यत्र तत्र सर्वत्र कचरा फेंक रही है। सो लाल जे सब ऐसई चलत है। चिंता काहे को करत हो। कुरसी पै काऊ की बपौती नाय होत है। अगर छिन रही है तो फिर मिल जाएगी। जीत जइहौ तो फिर मौज करिहौ। मन छोटो नाय करत हैं। चलो उठो, दोनों देवर-भौजाई मिलि के फाग गाएं........... होरी आई रे हिन्दथाण में...........

-डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश'-

फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज द्वारा प्लम्बर सम्मेलन संपन्न

उदयपुर। विश्व प्लम्बिंग दिवस के अवसर पर फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लि. ने पूरे देश में प्लम्बरों के 60 सम्मेलन आयोजित किए जिनमें लगभग 3000 प्लम्बरों ने भागीदारी की। उदयपुर में यह सम्मेलन विजय सेनेट्री ट्रेडिंग कंपनी पर हुआ। इसमें 60 प्लम्बरों ने भाग लिया। उन्हें वर्षा जल संभरण, एसडब्लूआर पाइप्स और एकीकृत रिंग्स के साथ फिटिंग्स की जानकारी दी गई।

कंपनी के इरादों और योजनाओं के बारे में बताते हुए कार्यकारी चेयरमैन, प्रकाश छाबरिया ने सभी साठ प्लम्बर सम्मेलनों के लिए अपना विडिया संदेश भेजा। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान में प्लम्बर समाज की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। इस वीडिया द्वारा प्रशिक्षण मॉड्युल के सहारे निर्माण से जुड़े कारीगरों और अकुशल प्लम्बरों को बुनियादी वांछित और वर्जित कार्य के बारे में बताया जाएगा। इसमें प्लम्बिंग से जुड़े सुरक्षा संबंधी निर्देश, नालियाँ, जल निकासी प्रणाली, सेप्टिक पाइपों और इस उद्योग का ताकनीकी ज्ञान जैसी जरूरी जानकारियाँ उपलब्ध कराई गई हैं। आयोजन में एक पाठ्यपुस्तक (हैंडबुक फॉर प्लम्बर्स ऐंड ट्रेनर्स / प्लम्बरों एवं प्रशिक्षकों के लिए विवरण पुस्तिका) का लोकार्पण भी किया गया। फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज के कुशल स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम का लक्ष्य आने वाले 5 से 7 वर्षों में लगभग 1,00,000 प्लम्बरों को प्रशिक्षित करने का है।

प्रकाश छाबरिया ने कहा कि प्लम्बिंग समुदाय से इतने सारे सदस्यों से जुड़ना बड़ी खुशी की बात है। 'स्किल इंडिया' एक कार्यक्रम नहीं बल्कि उससे भी बढ़कर एक विशाल अभियान है। हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो अपने सभी कार्यों में कठिन परिश्रम और मूल्यवर्द्धन में यकीन करते हैं। आने वाले वर्षों में कुशल-क्रेडाई के सहयोग से देश के हर क्षेत्र में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएंगे।

साहित्य के प्रति आस्था का उमड़ाव

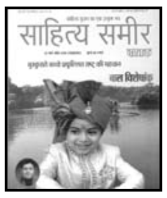

धर्म और अध्यात्म के प्रति जनास्था का उमड़ाव तो भारत भूमि की विशेषता ही रही है और यही इसकी पहचान भी है किंतु साहित्य के प्रति भी लोगों का बढ़ता रूझान देख अच्छा लगता है। जगह-जगह देश के नहीं, विदेश तक के साहित्यकारों का मिलन, सहित्य के सवालों पर धारदार तीखी तेज होती चर्चाएं और लोकार्पणों से सबओर साहित्य की सुगम पहुंच ने निश्चय ही एक बाजार बनाया है।

राजस्थान की भूमि साहित्य सृजन की भूमि रही है। इसने तो हिन्दी साहित्य को ओजस्वी बनाने का बल्कि भगीरथ कार्य ही किया है। वर्तमान में भी इसकी भूमिका अग्रणी ही कही जानी चाहिए। बालसाहित्य का क्षेत्र भी यहां उतना ही उर्वर है। कई अच्छे लेखक और बालपत्रिकाएं हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर अपनी पैठ दिये हैं। ऐसे समारोह भी अलग से यहां आयोजित होते हैं जहां राष्ट्रभर से नामचीन बालसाहित्य के विद्वानों का सान्निध्य बना रहता है। यह कम आश्चर्य नहीं है कि अधिकांश लेखक गांवों के हैं।

बालसाहित्य लेखकों में राजकुमार जैन 'राजन' भी आकोला जैसे छोटे से गांव के हैं। गिलूंड के जगदीशचन्द्र शर्मा ने तो अपने नाम के साथ जैसे गिलूंड उपनाम ही कर दिया है। विमला भंडारी भी सलूम्बर की हैं। और भी कई नाम हैं जो शुद्ध गांवों के हैं। उनके साहित्य में ग्राम्यजीवन की आंचलिकता का बोध मिलता है। ऐसे लोग भी हैं जो अच्छे लेखक के रूप में ख्यात हैं मगर उन्होंने बालसाहित्य के क्षेत्र में भी उपलब्धिमूलक लिखा है।

राजन के पक्ष में विशेष बात यह है कि वे टोप के व्यवसायी हैं और उसी टोप के लेखन के साथ-साथ वे सारे कार्य संयोजित कर रहे हैं जो बालसाहित्य के प्रोत्साहन, पहचान, प्रकाशन, पुरस्कार तथा पराक्रम से जुड़े हुए हैं। लेखन क्षेत्र में उनका संपर्क राष्ट्र-बंधु से लेकर ग्राम-बंधु तक से है। उनकी कई पुस्तकें बालसाहित्य के सिरे हैं, पुरस्कृत हैं और वे स्वयं जहां-जहां समारोहों में राष्ट्रव्यापी सम्मानों से शोभित होते रहते हैं। अपने नाम के ट्रस्ट के माध्यम से वे कई पुरस्कार-सम्मान प्रदान करते हैं।

कई पुरस्कारों में सबसे बड़ा पुरस्कार पं. सोहनलाल द्विवेदी के नाम का है जो इक्कीस हजार का है। बालसाहित्य के स्थापित लेखकों की स्मृति में भी और अपने माता-पिता तथा गुरु की स्मृति में भी प्रतिवर्ष उन्होंने पुरस्कार जारी किए हुए हैं। वे लेखकों को प्रकाशन सहायता भी देते हैं। स्कूलों में बालसाहित्य विषयक पुस्तकें भी भेंट स्वरूप पहुंचाते हैं। सामान्य घराने से जुड़ा और काई व्यक्ति या प्रतिष्ठान शायद ही कहीं मिलेगा जो इस तरह के कार्य संपादित कर रहा हो।

पिछले दिनों 2 मार्च को नाथद्वारा में साहित्य मंडल द्वारा आयोजित पाटोत्सव में राजन द्वारा प्रकाशित बालसाहित्य की तीन पुस्तकों तथा चार पत्रिकाओं का लोकार्पण हुआ। बाल विशेषांक की ये पत्रिकाएं राजन द्वारा संपादित हैं। इनमें भोपाल से प्रकाशित साहित्य समीर (संपादक कीर्ति श्रीवास्तव), भीलवाड़ा की साहित्यांचल (सम्पादक सत्यनारायण व्यास 'मधुप'), नीमच की राष्ट्र समर्पण (सम्पादक शारदा संजय शर्मा) तथा भोपाल की सार समीक्षा (संपादक अरविंद शर्मा) हैं।

लाइफमंत्राज' नेल्सन बेस्टसेलर चार्ट में अव्वल

उदयपुर। सहारा इण्डिया परिवार के प्रबन्ध कार्यकर्ता एवं अध्यक्ष सुब्रत रॉय सहारा की सम्पूर्ण सोच एवं रोमांचक पुस्तक 'लाइफमन्त्राज' नेल्सन बुक स्कैन की नॉन फिक्शन श्रेणी की पुस्तकों में पहले स्थान पर रही है। नेलसन बेस्ट सेलर लिस्ट के अनुसार हाल में में जारी 'लाइफमंत्राज' जिसका प्रकाशन रूपा पब्लिकेशन द्वारा किया गया है इस सप्ताह की नॉन फिक्शन सूची में मनोरमा ईयर बुक 2016 को दूसरे स्थान पर छोड़ते हुए प्रथम स्थान पर रही है।

नेल्सन बुक स्कैन सेवा विश्व की सबसे बड़ी सतत बुक सेल्स ट्रैकिंग सेवा है जिसका परिचालन भारत, यूके, आयरलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, यूएस, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड, इटली, ब्राजील और स्पेन से होता है। यह संस्था सभी ट्रांजिक्शन डाटा एक की स्थान पर एकत्र करती है जो कि उसे सभी खुदरा पुस्तक विक्रेता भेजते हैं। नेल्सन बुक स्कैन बुक सेलर्स से ऑन लाइन ऑफलाइन जिनमें बुकअड्डा, क्रॉसवर्ड, कनेक्शन, डीसी बुक्स, फिलिपकार्ट, इण्डिया टाइम्स, इनफिबिम, लैण्डमार्क, लैण्डमार्क रिटेल, कैपिटल बुक डिपो, रेडिफ, ओडेसी, पेजटर्नर, टीवी18 होमशॉपिंग, डब्ल्यूएच स्मिथ इण्डिया, ईबे, महिन्द्रा रिटेल, रिलायन्स टाइम आउट, स्नैपडील इत्यादि इनमें शामिल हैं। 'लाइफमंत्राज' अपने लांच होने के एक माह के भीतर इस चार्ट पर उचाइयां चढ़ती गई और बेस्टसेलर बन गई। अपनी पुस्तक में सुब्रत रॉय सहारा ने जीवन के विभिन्न दर्शनों और भावनात्मक पहलुओं का उलेख किया है जिसकी मूल प्रवृति सभी मानवों में है। इसलिए इसे जीवन का उपहार कहा जा सकता है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें प्रदान किया है। लाइफ मंत्राज थॉट्स फ्रॉम तिहाड़ की पहली पुस्तक है तथा यह भारत एवं विदेशों के सभी शीर्ष पुस्तक विक्रेताओं के यहां उपलब्ध है।

वंडर सीमेंट द्वारा ईको-फ्रेंडली होली मनाने का संदेश

उदयपुर। राज्य की अग्रणी सीमेंट कंपनियों में से एक वंडर सीमेंट लि. ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश फैलाने के उद्देश्य से लोगों से ईको-फ्रेंडली होली मनाने की गुजारिश की है। वंडर सीमेंट लि. के डायरेक्टर विवेक पाटनी ने कहा कि त्योहार की मस्ती के साथ ही उन बातों को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है जिनसे हम धोखे या अनजाने में अपने पर्यावरण और वातावरण को नुकसान पहुंचाते हैं।

होली बोनफायर या होलिका दहन के लिए लकड़ी जलाई जाती है जो चिंता का विषय है। लकड़ी के स्थान पर लोगों को खराब बक्से, गोबर के कंडे, नारियल के वेस्ट का होलिका दहन में इस्तेमाल करना चाहिए। वंडर सीमेंट त्वचा और बालों को किसी भी प्रकार के नुकसान से बचाने के लिए हर्बल रंगों के इस्तेमाल की सलाह देता है। बेसन, हल्दी, मुल्तानी मिट्टी, चंदन पाउडर, मेहंदी पाउडर आदि का इस्तेमाल अनेक रंग बनाये जा सकते हैं। इसके अलावा फूल जैसे गेंदा, गुलमोहर व सब्जियां जैसे चुकंदर का इस्तेमाल किया जा सकता है। पानी से भरी प्लास्टिक की थैलियां और गुब्बारे दूसरों पर फेंकने से बचें।

एनएलयू इंस्टीट्यूट की टीम बनी विजेता

उदयपुर। टाटा क्रूसिबल कैंपस क्विज़ 2016 प्रतियोगिता का मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में आयोजन किया गया जिसमें संजय कृष्ण और राजेंद्र डंगवाल (एनएलयू इंस्टीट्यूट) ने उदयपुर क्षेत्रीय राउंड में जीत दर्ज की। अब जोन 3 फाइनल में उनका मुकाबला 8 शहरों से आने वाले चैंपियनों से होगा। आईआईएम के सनीष सैमुअल और आनंद देसाई को उप-विजेता घोषित किया गया। प्रोफेसर फरीदा शाह, प्रोफेसर-इकनॉमिक्स तथा डीन ने विजेताओं को 75,000 रुपये और उप-विजेताओं को 35,000 रुपये की पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया।

टाटा क्रूसिबल कैंपस क्विज का 12वां संस्करण 20 सवालों के प्रीलिम और उसके बाद टी 20 प्रारूप के फाइनल के आधार पर खेला जाने वाला 20-20 गेम है। अब 36 शहरों में पहुंच चुके इस क्विज़ में टी 20 प्रारूप में कई आकर्षक राउंड हैं। ये राउंड प्रतिभागियों की सोचने की तीव्रता और सबसे आगे बढ़ने की उनकी क्षमता को परखने के लिए डिजाइन किये गये हैं। नेशनल फाइनल के विजेताओं को 5,00,000 रुपये के पुरस्कार के साथ टाटा क्रूसिबल ट्रॉफी से सम्मानित किया जाएगा। सर्वश्रेष्ठ छह टीमों को प्रारंभिक लिखित और वाइल्ड कार्ड राउंड के बाद चुना गया (सिर्फ उन शहरों से जहां इसका आयोजन किया गया)। विजेताओं और उप-विजेताओं के अलावा चार चरणों के बाद फाइनल में पहुंची टीमों में रश्मि सोमानी और शिशिरनाथ (आईआईएम), आकाश माथुर और अभिनव भट (एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज), सिद्धार्थ बी, जेनेट एम, पीयूष शेखर और बिपिन कुमार (आईआईएम) शामिल हैं। इस क्विज़ की मेजबानी जाने माने क्विज़ मास्टर गिरीबाल सुब्रमण्यम ने की जिन्हें 'पिक ब्रेन' नाम से जाना जाता है और उन्होंने अपने सवालों से प्रतिभागियों और दर्शकों को निरंतर जोड़े रखा। टाटा क्रूसिबल कैंपस क्विज़ के लिए इस वर्ष पुरस्कार के लिए टाटा डोकोमो, फास्ट्रैक और टाटा मोटर्स ने समर्थन दिया।

45वाँ राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस एवं सप्ताह मनाया

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. आर.के. नगर, निम्बाहेड़ा में 45वाँ राष्ट्रीय दिवस का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष (वर्क्स) एस.एम. जोशी ने मुख्य अतिथि उप मुख्य निरीक्षक (कारखाना एवं बोयलर्स), चित्तौड़गढ़ जे.आर. गौतम का माल्यार्पण कर स्वागत किया। समारोह में कर्मचारियों, अधिकारियों, श्रमिकों एवं श्रमिक ठेकेदारों ने भाग लिया।

विद्युत अभियन्ता निलेश मिश्रा ने कर्मचारियों एवं श्रमिकों को सुरक्षा की शपथ दिलायी और सुरक्षा दिवस की जानकारी दी। मुख्य सुरक्षा अधिकारी आशीष मुखर्जी ने 2015 में वण्डर सीमेण्ट लि. के सुरक्षा के आंकडे, सुरक्षा के प्रति किये गये कार्य से सभी को अवगत कराया।

इस मौके पर जे.आर. गौतम ने सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी दी और सभी कर्मचारियों को विगत वर्ष में कोई भी रिपोर्टेबल दुर्घटना नहीं होने एवं प्रोजेक्ट समय में भी शून्य दुर्घटना पर बधाई दी। उन्होंने कार्यक्षेत्र में मोबाईल फोन के दुरुपयोग के बारे में सभी को अवगत कराते हुए कहा कि सरकार इसके बारे में शीघ्र ही कदम उठाएगी जिससे कार्य क्षेत्र में मोबाईल व्यवहार पर पाबंदी लगायी जा सके। एस.एम. जोशी ने बताया कि अगर हम सुरक्षित तरीके से कार्य करते हैं तो हमारा समय बचता है जो कि हमने 16 माह में सुरक्षा के नियमों का पालन करते हुये नये संयत्र निर्माण कर प्रमाणित भी किया।

उन्होंने कहा कि सुरक्षा हर व्यक्ति का जिम्मा है। संयुक्त अध्यक्ष, पी एण्ड डी सी.एस. शर्मा ने सुरक्षा के नियमों की पालन करने का अनुरोध किया।

सुरक्षा सप्ताह में नारा प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं वार्ता आयोजित की गई जिसमें भाग लेने वाले वण्डर सीमेण्ट लि. के प्रतिभागियों को पुरूस्कृत किया गया। मुख्य वित्त अधिकारी जयदीप शाह ने धन्यवाद जबकि संचालन नरेन्द्र भट्ट ने किया।

कान्यो मान्यो खून देने के बहाने

कई तरह के रिश्तों में खून के रिश्ते सबसे अहम् होते हैं। जब किसी के खून की कमी हो जाती है तब किसी अन्य का खून चढ़ाया जाता है अन्यथा रोगी के बचने की उम्मीद जाती रहती है। इस खून के अलग-अलग ग्रुप होते हैं। एक ही ग्रुप का खून एक-दूसरे के लिए कारगर सिद्ध होता है। कान्यो एक शिविर में बोल रहा था।

बोलने के बाद मान्यो बोला- खून के रिश्तों की बात तो बहुत पहले भी प्रचलित थी पर खून चढ़ाने वाली बात से कोई परिचित नहीं था। अब तो यह बात आम हो गई है पर अभी भी लोग मौका आने पर अपना खून देने को कतराते हैं। कान्यो बोला- तुम ठीक कहते हो मान्यो। एकबार मेरे गांव से शहर में दोला बा को इलाज के लिए लाया गया। डाक्टर बोला- इन्हें खून की जरूरत है। फटाफट व्यवस्था करो ताकि इनके प्राण बचाये जा सकें। साथ वाले कई थे पर ना समझ थे। दोला बा की बूढ़ी बहू ही उनमें ऐसी थी जिसका खून दोला बा को चढ़ सकता था किंतु वह पुराने विचारों की थी सो खून देने को टस से मस नहीं हुई। उसके मन में बैठा हुआ था कि एक बूंद भी यदि किसी को दे दी तो उस स्वयं का प्राण निकल जाएगा। सगे समधियों ने समझाया कि किसी को बचाना मारना तो ऊपरवाले के हाथ में है पर घरवाली ही जब अपने पति परमेश्वर के लिए सबकुछ न्यौछावर नहीं कर सकती तो दूसरों की क्या बात करें।

धणियाणी सबकुछ सुनती रही और अंत में अपने लंबे घूंघट में बंधे हाथ जोड़कर बोली- वे काले मरे तो आज मरो भला पण म्हूं तो म्हारे लोई री एक बूंद दै म्हारा पिराण नहीं छोड़नी चावूं। आपणी-आपणी जिंदगाणी सबने प्यारी लागै। जो लिख्यो वेई तो वी आपई जीवीजाई अर जो नी लिख्यो वेई तो ऊपरलो भी वांनै नी वंचाय सकी।

मान्यो कई बोलतो। वो तो जानता था कि उसके घर में जब उसकी धीयड़ी बीमार पड़ी तो बूढ़लै नानाजी को खून देने के लिए तैयार किया गया। नानाजी रत्तीभर नहीं चाहते पर सभी उन पर कागले की तरह टूट पड़े तो उन्होंने बूढ़ापे में अपना खून दिया। इससे वह बालकी तो बच गई पर जब तक बासा जीवित रहे उसे याद करते रहे और उसका नाम ही खून चूसणी कर दिया। वह जब-जब उनसे मिलने आती वे यही कहते- या आ गई म्हारो खून चूसणी।

कान्यो बोला- अब तो ब्लड बैंक हो गये हैं और कई संस्थाएं प्रतिवर्ष ही अपने सदस्यों द्वारा खून देने के शिविर लगाती हैं। कई भाई तो प्रतिवर्ष ही अपने जन्मदिन पर खून देते हैं। मान्यो बोला- केवल नाखून और बाल ही हैं जो खून नहीं देते हैं। मनुष्य देह को हर वर्ष खून देना चाहिए। इससे वह स्वस्थ रहती है।

कान्यो बोला- वह दिन आने वाला है जब जीवन में एक दो बार आदमी को अपना पूरा खून देकर नया लेना पड़ेगा। इसी से वह दीर्घायु बना रह सकेगा। कहा जाता है कि उदयपुर में हिंदी पढ़ानेवाली डॉ. सुधा गुप्ता को अस्पताल में खून देने के लिए कॉलेज की बालाओं की लंबी लाईन लग गई थी। सबने अपना खून दिया, इतना कि उनके निजी खून की एक बूंद भी नहीं रही। पूरा खून नया था। वह बच तो नहीं पाई किंतु उच्च लोक की स्वामिनी बनी।

बालकवि बैरागी को एक लख वाणी सम्मान

भारतीय काव्यमंच के अग्रणी रचनाकार बालकवि बैरागी को वाणी सम्मान प्रदान किया जाएगा। मेरठ के पंवार वाणी फाउण्डेशन के सचिव अजय प्रेमी के अनुसार एक लाख रूपये का यह सम्मान बालकविजी को हिन्दी साहित्य के उनके प्रति समर्पण और अप्रतिम योगदान को दृष्टिगत रखते हुए 19 जुलाई को मेरठ में आयोजित होने वाले स्व. विश्वंभर सहाय प्रेमी काव्य संध्या एवं सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। फाउण्डेशन के अध्यक्ष प्रख्यात लोकप्रिय कवि डॉ. हरिओम पंवार ने बताया कि इस सम्मान से फाउण्डेशन के साथ-साथ मेरठ का संपूर्ण साहित्यिक जगत भी गौरवान्वित हुआ है। बैरागीजी ने बताया कि गैर सरकारी संस्थान द्वारा उन्हें मिलने वाला यह सबसे बड़ा, मूल्यवान तथा गरिमाजनित सम्मान है।

घुटना प्रत्यारोपण की नई तकनीक सर्वाधिक सस्ती और आसान

उदयपुर। भारतीय संस्कृति में मनुष्य का जमीन पर बैठना उसके स्वस्थ होने की निशानी माना जाता है। आधुनिक जीवन शैली एवं पानी में फ्लोराइड के चलते आज ज्यादातर लोगों में घुटने में दर्द की शिकायत होना आम हो गया है। ऐसे मरीजों के लिए पेसिफिक मेडीकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल में एक विशेष तकनीक का कृत्रिम घुटना एवं कूल्हा प्रत्यारोपित किया जा रहा है जिसके चलते मरीज एक स्वस्थ इंसान की तरह आराम से जमीन पर बैठ मनचाहे कार्य कर सकता है। अस्थि रोग सर्जन डॉ सालेह मोहम्मद कागजी ने बताया कि घुटना प्रत्यारोपण की इस लेटेस्ट तकनीक द्वारा आधुनिक डिजाइन एवं सामान्य से अलग छोटे चीरे से दोनों घुटनों का ऑपरेशन किया जा सकता है। इस तकनीक से होने वाले ऑपरेशन में लागत भी लगभग 50 फीसदी तक कम आती है साथ ही छोटे चीरे एवं कम रक्त स्त्राव के कारण मरीज ऑपरेशन के अगले दिन से ही चल फिर सकता है। प्रिंसिपल एवं नियंत्रक डॉ. एस.एस. सुराणा ने बताया कि इस तरह के ऑपरेशन में रक्त की कमी की भरपाई के लिए मरीज का रक्त लेकर उसी को चढ़ा दिया जाता है। इससे अन्य व्यक्ति के रक्तदान से होने वाली जानलेवा बीमारी हेपेटाइटिस,एड्स आदि से भी बचा जा सकता है।

राजस्थान में 28 हजार करोड़ की 67 पेयजल परियोजनाएं प्रगति पर

उदयपुर। इधर गर्मी का मौसम शुरू हो रहा है और उधर जलमंत्री किरण माहेश्वरी ने पूरे राज्य को शुद्ध पेयजल प्रदान करने का बीड़ा उठा लिया है। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी से जुड़े सभी विभागों, अधिकारियों और कर्मचारियों को अलर्ट कर सावधानीपूर्वक कार्य निष्पादन के साथ समयबद्धता सुनिश्चित कर दी है।

वैसे भी राजस्थान रेगिस्तान के रूप में अपनी पहचान लिए है। यहां की धरती को ही धोरों की धरती कहकर सम्बोधित किया गया है। बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर का क्षेत्र तो पूर्णत: रेतीस्थान ही है। अन्य अंचल में भी पानी का अभाव ही देखते हैं इसीलिए अकाल की मार सर्वाधिक इसी प्रदेश को झेलनी पड़ती है।

श्रीमती माहेश्वरी ने विविध अंचलों की यात्राएं शुरू कर पेयजल की उपलब्धता तथा आवश्यकता को अपनी प्राथमिक कार्ययोजना बनाकर अधिकारियों से गहन

विचार विश्लेषण मंथन कर समयबद्ध चरण में उपलब्धिपरक कार्य करने के कड़े निर्देश दे दिये हैं। इससे हड़कंप से अधिक हलचल और उससे भी अधिक चल प्रणाली देखी जा रही है। फाईल चल निकलेगी तो जल भी चल निकलेगा।

पिछले दिनों श्रीमती माहेश्वरी गोगुन्दा क्षेत्र के नला गांव के पास परियोजना कार्यस्थल पर पहुंची। योजना की डीपीआर पर वहां उन्होंने विस्तार से मंथन किया और अपने सुझावों के साथ कार्यकारी एजेन्सी को शीघ्र कार्य शुरू करने के निर्देश दिए।

श्रीमती माहेश्वरी ने बताया कि राजसमंद जिले की महती पेयजल परियोजना के लिए प्रथमतः सरकार ने एक हजार चौसठ करोड़ की स्वीकृति दे दी है। परियोजना के प्रथम चरण में दो बांध बनाये जाने प्रस्तावित हैं। इसके साथ ही इन दोनों बांधों को जोड़ना तथा पाइपलाइन बिछाने के काम को भी शामिल किया गया है। देवास परियोजना के तहत उदयपुर, राजसमंद जिले ही नहीं वरन् परियोजनाओं से लगते गांवों एवं कस्बों को भी लाभान्वित किया जायेगा।

उदयपुर में जयसमंद से 93 गांवों को पेयजल योजना से जोड़ने के लिए 111 लाख रुपये की डीपीआर बनाई जा रही है। उदयपुर संभाग में सतही जल का लाभ आमजन को सुलभ होने के प्रयास चालू हैं। इस प्रकार पूरे राजस्थान में 28 हजार करोड़ की लागत की कुल 67 पेयजल योजनाएं पगति पर है। उदयपुर संभाग में जाखम बांध से प्रतापगढ़ जिले में पेयजल उपलब्ध कराने के लिए 76 करोड़ के कार्यादेश जारी कर दिये गये हैं। बड़ी मात्रा में गुजरात बहकर जाने वाले जल के सदुपयोग करते हुए सीमलवाड़ा, गलियाकोट, जूथरी व बिछीवाड़ा की कार्ययोजना प्रस्तावित है। बेणेश्वर परियोजना से साबला व सागवाड़ा, सोम कमला आंबा से आसपुर, डुंगरपुर व ढोबरा तथा कुशलगढ़, बागीदौरा व सज्जनगढ़ के लिए डीपीआर बनाने के निर्देश दिए गए हैं।

हिन्दुस्तान जिंक़ देश की श्रेष्ठतम कंपनियों में मान्य

सीआईआई-आईटीसी द्वारा स्थापित सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स फॉर सस्टेनेबल डवलपमेंट ने पर्यावरण, सामाजिक विकास एवं निगमित के क्षेत्र में कार्य कर रही 100 अग्रणीय कंपनियों को परखा। इन कंपनियों की 20 अलग-अलग क्षेत्रों में चयन कर इनकी कार्यप्रणाली, पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास तथा निगमित क्षेत्र में उल्लेखनीय देन की परख की गई। इस दृष्टि से वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक़ को देश की दस कंपनियों में श्रेष्ठ कार्य के लिए चुना गया।

इस प्रमाण के साथ ही हिन्दुस्तान जिंक़ अब सस्टेनेबल प्लस प्लेटिनम का चिन्ह अपने विभिन्न प्रकाशनों में लगा पाएगा जिससे कंपनी की मान्यता व गुणवत्ता पर और अधिक सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

हिन्दुस्तान जिंक़ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने बताया कि सीआईआई-आईटीसी द्वारा स्थापित सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स फॉर सस्टेनेबल डवलपमेंट की प्रामाणिकता हिन्दुस्तान जिंक़ के पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं निगमित के क्षेत्र में किये गये प्रयासों को प्रमाणित करती है।

सीआईआई-आईटीसी द्वारा स्थापित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर सस्टेनेबल डवलपमेंट की एग्जीक्यूटीव डायरेक्टर सीमा अरोड़ा ने कहा कि वेदांता पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं निगमित क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
शिक्षाप्रद कठपुतली नाटिकाएं	50/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	50/-
कुंवारे देश के आदिवासी	60/-
जिन्हें मैं जानता हूं	50/-
अजूबा राजस्थान	60/-

'नीरज' अबोध कवि

बड़े कवियों की आपसी चुहल-फुदक भी कम बड़ी नहीं होती। वे मसखरी-मूड में भी कई बार ऊंची गूढ़ और पते की बात कह जाते हैं। सच भी है जो अनूठा तथा असाधारण होता है वह किसी भी अवस्था तथा आनंद की स्थिति में हो, असाधारण ही कुछ सार-तत्व-सत्व की बात करेगा।

बालकवि बैरागी ने बताया कि वे नीरजजी को अबोध कवि मानते हैं। अबोध कवि में कोई आंट-वांट नहीं होती। वह सरल एवं सहज मन का चित्तानंद होता है। एक शानदार कविसम्मेलन के बड़े मंच पर उन्होंने नीरजजी को भारतीय कविसम्मेलनों के विश्वव्यापी प्रभाव को देखते हुए उनके अवदान के बारे में पूछा। यह सुन नीरज बिना गहन-गंभीर हुए सहज मुस्कान बिखेरते बोले- मेरे अवदान को तो तुम जानो, जो कुछ भी मानो पर सच यह है कि मेरे अभ्युदय के बाद लोगों ने कवियों को अपने घर में ठहराना बंद कर दिया है। **(जैसा बैरागीजी ने उदयपुर में 5 मार्च 2016 को डॉ. तुक्तक भानावत को बताया।)**

कहं बदल्यौ हिन्दथान

(1)
अजहुं मंदर झालरां, अजहुं मसीत अजान।
अजहुं घंट गिरिजा घरा, कहं बदल्यो हिन्दथाण।
(2)
गारा उं माथा नावणा, लच्छा केश बंधाण।
जुआं लीक अजहुं कढै, कहं बदल्यो हिन्दथाण।।
(3)
रात रात जागण अज्हु व्है, परभात्यां गान।
लाडू बाटी जीमणा, कहं बदल्यो हिन्दथाण।।
(4)
अज्हुं नारेल बदारणा, देवत हंदे थान।
आखा पाती मांगणा कहं बदल्यो हिन्दथाण।।

-देवकर्ण सिंह

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।